।। श्री आदिनाथाय नमः ।।

श्री भक्तामर स्तोत्र विधान

-: मंगल आशीर्वाद :-

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य 108

श्री विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

एवं

समाधिस्थ परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य

108 श्री ज्ञान सागर जी मुनिराज

-: रचयित्री :-

परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,

गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी

-: प्रकाशक :-

श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि०)

कृति : श्री भक्तामर स्तोत्र विधान

कृतिकार : गणिनी आर्यिका श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी

अष्टम् संस्करण : 2100 प्रतियाँ

प्रकाशन वर्ष : 2025

न्यौछावर राशि : 25.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)

प्राप्ति स्थान :

1. **राकेश जैन, महामंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 9650946696
2. **उमेश जैन, मंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 7982630514
3. **श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक, दिल्ली**
   दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
4. **श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य प्रदेश)**
   दूरभाष : 9425726867
5. **श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम**
   शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
   दूरभाष : 8824620107

Website - www.munisuvratswastidham.com
Instagram - munisuvrat_swastidham
Facebook - munisuvratswastidham
Youtube - swastidhamjahazpur

मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली) मो. 9210488047

प्रशांत मूर्ति आचार्य शांतिसागर प्रथम 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

बाल ब्रह्मचारी, प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज प्रथम 'छाणी' (उत्तर)

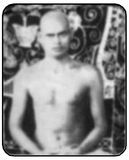

जन्म तिथि – कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (सन् 1888)
जन्म स्थान – छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)
जन्म नाम – श्री केवलदास जैन
पिता का नाम – श्री भागचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती माणिक बाई
क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1922 (वि.सं. 1979), बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मुनि दीक्षा – सन् 1923 (वि.सं. 1980), डूंगरपुर (राजस्थान)
आचार्य पद – सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)
समाधिमरण – 17 मई, 1944 (वि.सं. 2001), सागवाड़ा (राजस्थान)

परम पूज्य आचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज (प्रथम पट्टाचार्य)

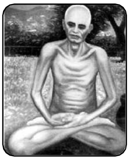

जन्म तिथि – कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं.1940(8 नवम्बर सन् 1883)
जन्म स्थान – प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री हजारीमल पारेवाल जैन
पिता का नाम – श्री हीरालाल जैन
माता का नाम – श्रीमती गेदा बाई
ऐलक दीक्षा – सन् 1924 (वि.सं. 1981), इन्दौर (मध्य प्रदेश)
मुनि दीक्षा – सन् 1924 (वि.सं. 1981), देवास (म.प्र.)
आचार्य पद – सन् 1928 (वि.सं. 1985), कोडरमा (झारखंड)
समाधिमरण – सन् 1952 (वि.सं. 2009), डालमिया नगर (झारखंड)

परम पूज्य आचार्य 108 श्री विजयसागर जी महाराज (द्वितीय पट्टाचार्य)

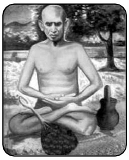

जन्म तिथि – माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (सन् 1881)
जन्म स्थान – सिरोली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री चोखेलाल जैन
पिता का नाम – श्री मानिक चन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती लक्ष्मी बाई
क्षुल्लक दीक्षा – इटावा (उत्तर प्रदेश)
ऐलक दीक्षा – मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मुनि दीक्षा – नागौर, राजस्थान (आचार्य श्री सूर्यसागर जी से)
आचार्य पद – लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.)
समाधिमरण – सन् 1962 (वि.सं. 2019), ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

पूरज पूज्य आचार्य 108 श्री विमलसागर जी महाराज 'भिण्ड' (तृतीय पट्टाचार्य)

जन्म तिथि – पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (सन् 1892)
जन्म स्थान – मोहिना,जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री किशोरीलाल जैन
पिता का नाम – श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती मथुरा देवी
क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1941 (वि.सं. 1998), झालरापाटन (राजस्थान)
मुनि दीक्षा – सन् 1943 (वि.सं. 2000), कोटा (राजस्थान)
आचार्य पद – सन् 1973 (वि.सं. 2030), हाड़ोती (राजस्थान)
समाधिमरण – सन् 1973 (वि.सं. 2030), सांगोद (राजस्थान)

मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य आचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज (चतुर्थ पट्टाचार्य)

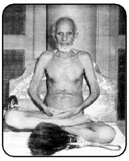

जन्म तिथि	–	आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (22 अक्टूबर, 1917)
जन्म स्थान	–	श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	–	श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम	–	श्री छिद्दूमल जैन
माता का नाम	–	श्रीमती चिरौंजी देवी
ऐलक दीक्षा	–	सन् 1968 (वि.सं. 2025), रेवाड़ी (हरियाणा)
ऐलक दीक्ष गुरू	–	आचार्य विमलसागर जी महाराज
ऐलक नाम	–	श्री वीरसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा	–	सन् 1968 (वि.सं. 2025), गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
आचार्य पद	–	सन् 1973 (वि.सं. 2030), मुरैना (म.प्र.) (आचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण	–	सन् 1994 (वि.सं. 2051), सोनागिरि सिद्धक्षेत्र (म.प्र.)

परम पूज्य आचार्य 108 श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर जी महाराज (पंचम पट्टाचार्य)

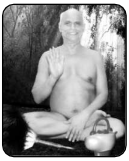

जन्म तिथि	–	अगहन वदी पंचमी, वि.सं. 2006 (10 नवम्बर 1949)
जन्म स्थान	–	बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम	–	श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम	–	श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम	–	श्रीमती सरोज देवी
क्षुल्लक दीक्षा	–	सन् 1972 (वि.सं. 2029)
मुनि दीक्षा	–	सन् 1988 (वि.सं. 2045), सोनागिरी सिद्धक्षेत्र
मुनि दीक्षोपरान्त नाम	–	मुनि श्री 108 सन्मतिसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू	–	आचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद	–	सन् 1989 (वि.सं. 2046), नरवर नगर (म.प्र.)
समाधिमरण	–	सन् 2013 (वि.सं. 2070), दिल्ली

सराकोद्धारक परम पूज्य आचार्य 108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज (षष्टम पट्टाचार्य)

जन्म तिथि	–	वैशाख शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 2014 (1 मई, 1957)
जन्म स्थान	–	मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	–	श्री उमेश कुमार जैन
पिता का नाम	–	श्री शांतिलाल जैन
माता का नाम	–	श्रीमती अशर्फी देवी
ब्रह्मचर्य व्रत	–	सन् 1974 (वि.सं. 2031)
क्षुल्लक दीक्षा	–	सन् 1976 (वि.सं. 2033), सोनागिरि स्द्धिक्षेत्र
क्षु. दीक्षा गुरू	–	आचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज
क्षु. दीक्षोपरान्त नाम	–	क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा	–	सन् 1988 (वि.सं. 2045), सोनागिरि सिद्धक्षेत्र
मुनि दीक्षोपरान्त नाम	–	मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू	–	आचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज
उपाध्याय पद	–	सन् 1989 (वि.सं. 2046), सरधना (मेरठ)
आचार्य पद	–	सन् 2013 (वि.सं. 2070), बड़ागाँव (बागपत)

परम पूज्य गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्तिभूषण माता जी

जन्म तिथि	–	1-11-1969
जन्म स्थान	–	छिंदवाडा (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम	–	संगीता (गुड़िया)
पिता का नाम	–	श्री मोती लाल जैन वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)
माता का नाम	–	श्रीमती पुष्पा रानी जैन वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)
लौकिक शिक्षा	–	एम. ए. (संस्कृत)
दीक्षा गुरू	–	आ. श्री 108 विद्याभूषण सन्मतिसागर जी महाराज
दीक्षा तिथि व स्थान	–	24 जनवरी 1996 (इटावा)
दीक्षा नाम	–	आर्यिका 105 स्वस्ति भूषण

तेजोमयि व्यक्तित्व की धनी आर्यिकारत्न श्री स्वस्तिभूषण माताजी

-डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत
(अध्यक्ष-अ.भा. शास्त्री परिषद्)

यों तो आर्यिकाओं और साध्वियों का बहुत बड़ा समुदाय भारत वसुंधरा पर जिनधर्म की प्रभावना कर रहा है। उनमें विलक्षण प्रज्ञा और प्रतिभा को धारण करने वाली आर्यिका माताओं का विशिष्ट स्थान है। उन्हीं प्रज्ञा और प्रतिभाशीला आर्यिकाओं में गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माताजी का व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण और आकर्षक है। इनके जीवन में सरलता, विद्वत्ता, श्रद्धा और विवेक का अनूठा संयोग है। वह मधुर भाषिणी, शांतचेता और सदा प्रसन्न रहने वाली आर्यिका हैं। सदा स्वाध्याय, ध्यान, चिंतन, मनन अध्ययन - अध्यापन में लीन रहती हैं। मैत्री, करुणा, प्रमोद, माध्यस्थ भाव आपके जीवन के कण - कण में समाए हुए हैं। यही कारण है कि आपके जीवन में कटुता और क्रोध कषाय आदि का अभाव है। आप प्रत्येक व्यक्ति में गुण अवलोकन करती हैं और नीरस जीवन में भी सरसता के सम दर्शन करती हैं। आपके पीयूषवर्णी प्रवचनों ने लोगों में आस्था के दीप प्रज्वलित किए हैं। समाज के व्यक्तियों में अंधविश्वास, अंधपरम्परा, रूढ़िवाद, जातिवाद, स्वार्थ, अंधता, ऊंच-नीच विषयक विषमता आदि दुर्गुणों को हटाने में आपकी अहम भूमिका है। नैतिक उत्थान के लिए आप अहर्निश प्रयत्न करती रहती हैं।

आपने दीक्षा धारण करने के बाद भी शिक्षा निरंतर ग्रहण की है, क्योंकि दीक्षा के साथ शिक्षा भी आवश्यक है। बिना शिक्षा के दीक्षा में कोई चमत्कृति पैदा नहीं होती है। ज्ञानाराधना से साधक जीवन में निखार आता है, जो आपश्री के जीवन में आया। ज्ञानाराधन करते हुए आपने शताधिक ग्रंथों का लेखन किया है। भक्ति साहित्य में तो नई चेतना ही लाई है। बहुत विधान और पूजाओं का लेखन कर लाखों लाखों व्यक्तियों को जिनेन्द्र भक्ति में जोड़ा है। समवशरण विधान, सर्वतोभद्र विधान, सिद्धचक्रविधान, कल्पद्रुम विधान आदि महाविधानों के माध्यम से समाज को भक्ति आयोजन करने-कराने की प्रेरणा दी है। वहीं एक दिवसीय विधानों के माध्यम से भक्ति सरोवर में अवगाहन कराया है।

आपकी लेखनी लोकप्रिय है। आप निरंतर सरल, सरस, सुबोध लेखन करती हैं। काव्य क्षेत्र में 'बड़ा ही महत्व है' इस काव्य के माध्यम से तो जन-जन को लुभाने का कार्य किया है। सभी लोगों में माताजी द्वारा बोला और लिखा जाने वाला 'बड़ा ही महत्व है' बड़ा ही प्रिय है। लेखन शैली जितनी प्रभावक है, उतनी ही प्रभावक आपकी प्रवचन शैली है। प्रवचन करते हुए जब आपकी वाणी रूपी सरिता कल-कल छल-छल कर प्रवाहित होती है तो श्रोता गण आनंद से झूम उठते हैं। आपके प्रवचनों में अंत:करण से निकले हुए उद्‌गार बहुत ही स्फूर्त सहज और स्वाभाविक होते हैं।

आपके जीवन की अनेक विशेषताएं हैं। अलौकिक शिक्षा में विशेष सम्मान प्राप्त कर धार्मिक शिक्षा की गहराइयों में पहुंची, आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुमान को प्राप्त किया। अपने गुरु सिंहरथ प्रवर्तक आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर महाराज की अनुकृति बनकर उन जैसे ही शताधिक रचनाएं कर गौरव बढ़ाया और लोकोत्तर रचना त्रिलोक तीर्थ के समान देवाधिदेव श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर की मनोहर चमत्कारी प्रतिमा को विराजित कर जहाजपुर में जहाजाकृति जैन मंदिर का निर्माण कराया जहाजपुर अतिशय क्षेत्र को त्रिलोक तीर्थ जैसी प्रसिद्धि प्राप्त कराने वाली आर्यिकाश्री स्वस्तिभूषण अपने आप में महान तेजोमयी व्यक्तित्व हैं। आपने अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा में चौबीसी निर्माण, सिद्ध क्षेत्र सोनागिरि में सहस्रकूट जिनालय, झालरापाटन पाटन का जीर्णोद्धार, मुरैना में गुरुकुल, डोला जी अतिशय क्षेत्र का जीर्णोद्धार आपके निर्देशन में सम्पन्न हो रहा है एवं केशवराय पाटन प्राचीन तीर्थ का संपूर्ण नवीनीकरण भी आपके निर्देशन में हो रहा हैं।

इनके जीवन में सूर्य की तेजस्विता, चंद्रमा की शीतलता, सागर की गंभीरता, पृथ्वी की सहिष्णुता, कमल की निर्लिप्तता आकाश की शुभता है। जीवन में सद्‌गुणों का साम्राज्य है। आपकी आकृति में नम्रता है, प्रकृति में सहजता है और सेवा में नि:स्वार्थता है। ज्ञान की गरिमा और आचार की मधुरिमा से आपका व्यक्तित्व जगमगा रहा है।

हमें गौरव है कि विद्वानों को सतत वात्सल्य प्रदान कर अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्री परिषद् को अधिवेशन, अनेक संगोष्ठियों की प्रेरणादात्री विभूति संयम साधना के क्षेत्र में अभिनंदनीय व्यक्तित्व की धनी स्वस्ति भूषण माता जी के चरणों में बारंबार वंदामि।

श्री भक्तामर स्तोत्र विधान

माण्डला

विनय पाठ

विनय पाठ पढ़कर करूं, पूजा का आरम्भ।
पंच परम परमेष्ठी को, वंदन का प्रारंभ।।
चार कर्म को नष्ट कर, बनें आप अरिहंत।
संकट हर मंगल करो, मिले मुक्ति का पंथ।।
सिद्ध शुद्ध परमात्मा, सिद्धालय में वास।
कार्य सिद्ध होवें मेरे, यही प्रभु से आश।।
आचारज उवज्झाय गुरु, सर्व साधु मुनिराज।
ज्ञान ध्यान तप में रहें, नमता सकल समाज।।
चौबीसों जिनराज के, चरण कमल को ध्यायें।
जिनवाणी वरदान दें, शत्-शत् शीश झुकायें।।
मंगल मय जिनधर्म है, मंगल मय जिन ज्ञान।
मंगल सम्यग्दर्शी को, बारम्बार प्रणाम।।
शत इन्द्रों से पूज्य हो, तीन लोक के नाथ।
कर्म बन्धा काटो प्रभु, दे दो अपना साथ।।
जगत सिन्धु में डूबते, दे दो सहारा नाथ।
मात पिता बंधु तुम्हीं, तुम्हीं हमारे भ्रात।।
पद पंकज जो पूजता, सकल विघ्न नश जाय।
सच्ची भक्ति कर रहे, सच्चा पथ मिल जाय।
चिंता तज चिंतन तेरा, करने आया द्वार।
गुण गाकर भक्ति करूं, दो मुझको आधार।।
स्वारथ के संसार में, मैं हूँ अकेला देव।
छोड़ जगत अब आ गया, करूँ आपकी सेव।।
गणधर ने गुण गाये थे, पर वे कह न पाये।
मैं अज्ञानी क्या कहूँ, चरणन शीश झुकाये।।

दया दृष्टि मुझ पर करो, दुखिया हूँ हे नाथ।
नहीं घटेगा आपका, मुझे मिले सुख पाथ।।
व्यथा कहूँ किससे प्रभो, कोई ना रिश्तेदार।
लगन लगी अब आपसे, दो जीवन का सार।।
गतियों में मैं घूमता, किया न कुछ भी काम।
जय जिनवर जिनदेव जी, मिला आपका धाम।।
वीतराग प्रभु मिल गये, छोड़े रागी देव।
वीतरागता पाऊंगा, करूं आपकी सेव।
आकुलता अब छोड़ दी, समता रस परिणाम।
'स्वस्ति' बस वंदन करे, मिले मोक्ष का धाम।।

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं।
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चतारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा।
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्झामि, अरिहंते सरणं पव्वज्झामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्झामि, साहू सरणं पव्वज्झामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्झामि।

नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलिं क्षिपेत)

मंगल विधान

हो अपवित्र तन तो यदि, या करते कोई काम।
परमेष्ठी के ध्यान से, होवे पाप की हान।।
अपराजित यह मंत्र तो, करे विघ्न का नाश।
सब मंगल में प्रथम है, देवे मुक्ती वास।।
अर्हं शब्द को नमन है, परमेष्ठी का ध्यान।
सिद्ध चक्र का बीज है, बारम्बार प्रणाम।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि।

पंचकल्याणक अर्घ्य

शंभू छंद

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, और दीप धूप फल लाया हूँ।
शुभ मंगल गान करूं जिनगृह, कल्याण को अर्घ चढ़ाया हूँ।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण - पंचकल्याणकेभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी अर्घ्य

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, और दीप धूप फल लाया हूँ।
शुभ मंगल गान करुं जिनगृह, परमेष्ठी को अर्घ चढ़ाया हूँ।

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत - सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस्त्र नाम अर्घ्य

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, और दीप धूप फल लाया हूँ।
शुभ मंगल गान करूं जिनगृह, जिननाम को अर्घ चढ़ाया हूँ।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनअष्टाधिकसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसूत्र अर्घ्य

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, और दीप धूप फल लाया हूँ।
शुभ मंगल गान करूं जिनगृह, जिनसूत्र को अर्घ चढ़ाया हूँ।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानसम्यग्चारित्राणि तत्त्वार्थसूत्र दशाध्यायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल

चौपाई

श्री जिनेन्द्र की करें वंदना, तीन लोक के ईश हैं झुकना।
स्याद्वाद जिनधर्म के नायक, हो कल्याण तुम्हीं सब लायक।।
हो त्रिलोक गुरु जिन पुंगव हो, महिमाशाली निज स्थित हो।
आत्मज्योति अद्भुत प्रसन्न हो, हो कल्याण मैं भी धन्य हूँ।।
विमल हो निर्मल ज्ञानी अमृत, पर भावों को करते विस्मृत।
सब वस्तु के आप हो ज्ञायक, हो कल्याण आप हो नायक।।
द्रव्य शुद्धि भावों की शुद्धि, अवलंबन पूजा की वृद्धि।
यह यज्ञ करूं मैं प्रारंभ, हो कल्याण सुखों का आरंभ।।
महापुरुष पावन की गुरुता, मैं अल्पज्ञ हूँ मेरी लघुता।
मन में केवल ज्योति जगाऊँ, शुभ भावों से शीश झुकाऊँ।।

ॐ विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे परिपुष्पांजलिं क्षिपामि।।

स्वस्ति पाठ

ऋषभ अजित संभव जिन स्वस्ति, अभिनंदन स्वस्ति स्वस्ति।
सुमति पद्म सुपारस जिनवर, चन्द्रप्रभु स्वस्ति स्वस्ति।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य स्वस्ति स्वस्ति।

विमल अनंत धर्म शांति जिन, कुंथु अरह स्वस्ति स्वस्ति।
मल्लि मुनि नमि नेमि पार्श्व जिन, महावीरा स्वस्ति स्वस्ति।
स्वस्ति स्वस्ति चिंतन में हो, निशदिन हो स्वस्ति स्वस्ति।

इति जिनेन्द्र स्वस्तिमंगलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

शंभू छंद (तर्ज : भला किसी का...)

केवल ज्ञान मनः पर्याय औ, अवधिज्ञान बुद्धि ऋद्धि।
कोष्ठ बीज संभिन्न श्रोतृपद, दूर स्पर्श श्रवण ऋद्धि।।
दूरास्वादन घ्राण विलोकन, प्रज्ञा प्रत्येक पूर्वी ऋद्धि।
चतुर्दश पूर्वी प्रवादि अष्टांग, जंघा वन्हि श्रेणी ऋद्धि।।1।।

फल जल तंतु पुष्प बीजांकुर, गगन गमन धारी ऋद्धि।
अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, मन वच काया है ऋद्धि।।
काम रूप वशित्व ईशित्व है, है प्रकाम्य अंतर ऋद्धि।
आप्ति प्रतिघात दीप्त तप्त तप, महाउग्र तप घोर ऋद्धि।।2।।

घोर पराक्रम परम घोर तप, ब्रह्मचर्य आमर्ष ऋद्धि।
सर्वोषध आशीर्विष दृष्टि, दृष्टि अविष है क्ष्वेल ऋद्धि।।
विडौषध जल मल क्षीरस्त्रावी, घृतमधु अमृत है ऋद्धि।
है अक्षीण संवास महानस, होती है शुभ ये ऋद्धि।।3।।

मुनिवर जब तप करते रहते, ये तो स्वयं ही आती हैं।
चमत्कार नहिं अतिशय है ये, भक्त के मन को भाती हैं।।
ऐसे परम ऋषिवर मेरे, हम सब का कल्याण करें।
संकट दुख पीड़ायें हर कर, कर्म हमारे शीघ्र हरें।।4।।

ऋद्धि सिद्धि के स्वामी ऋषिवर, ऋद्धि सिद्धि भंडार भरें।
ऋषिवर चरणों नमन करें हम, सुख अमृत के पुष्प झरें।।

इति परमऋषिस्वस्तिमंगल - विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

महा समुच्चय पूजन

अरिहंत सिद्धाचार्य नमन कर, पाठक साधु को शीश झुकाकर।
णमोकार को मन से जपता, सारे पाप शमन मैं करता।।
सामायिक नित आत्म को ध्याकर, पूजा का शुभ भाव बनाकर।
अष्ट द्रव्य मैं लेकर आया, तेरी पूजा कर हर्षाया।।
सहस्रनाम को पढ़ हर्षाऊँ, नित आगम का ध्यान मैं ध्याऊँ।
ऐसी शक्ति हृदय में देना, अपने चरणों में रख लेना।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य,उपाध्याय, सर्वसाधु सरस्वती देवी, सोलहकारण भावना, दश धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनबिम्बेभ्योः, पंचमेरू नंदीश्वर द्वीप सम्बंधित जिनबिम्बेभ्योः, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरिनार, चम्पापुरी आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, चतुर्विंशति तीर्थंकर, गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो अत्र अवतर - अवतर संवौषट आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहतौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

चाल छंद 'तुम सम्मेद शिखर को जाइयो'

शुभ भावों का जल लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म मरण का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।
कृत्रिमाकृत्रिम को ध्याऊँ, पंचमेरू दर्शन जाऊँ।।
सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन पाऊँ।
दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ।।
दश धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।
नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन वंदन को लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म मरण का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।
कृत्रिमाकृत्रिम को ध्याऊँ, पंचमेरू दर्शन जाऊँ।।
सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन पाऊँ।
दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ।।
दश धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।
नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की।।

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अक्षत धोकर लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म मरण का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर ...

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों का हार सजाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म मरण का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर ...

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन का थाल मैं लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म मरण का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर ...

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ दीपक लेकर आऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म मरण का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर ...

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वन्हि में धूप जराऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म मरण का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर ...

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं सरस सभी फल लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म मरण का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर ...

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यों की माला लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म मरण का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर ...

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

त्रिभंगी छंद

प्रभु ध्यान लगाके, भावना भाके, मंगलमय जीवन करता।
हो चरण में वंदन, जीवन चंदन, भक्ति से मैं भव तरता।।

शंभू छंद

अरिहंत सिद्ध आचार्य गुरु का, हम नित वंदन करते हैं।
उपाध्याय और सर्व साधु का, ध्यान हृदय में धरते हैं।।
देव हो सच्चा शास्त्र हो सच्चा, सच्चे गुरु को ध्याऊँगा।
भरत ऐरावत ढाई द्वीप, तीसों चौबीसी ध्याऊँगा।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, दर्शन की आशा करता।
होगा जब प्रत्यक्ष दर्श तो, हिय भी हर्ष तभी धरता।।
तीर्थंकर की वाणी ही, जिनवाणी जन कल्याण करे।
भव से पार करादे उसको, जो इस पर श्रद्धान करे।।
कृत्रिमा-कृत्रिम तीन लोक के, जिन गृह को वंदन करता।
सिद्धालय के सिद्धों को ध्या, उन सम बनूँ आशा करता।।
पाँच मेरु के जिन बिम्बों को, करूँ मैं शत-शत बार नमन्।
नंदीश्वर के बावन जिन ध्या, पाप कर्म का करूँ शमन।।
सोलह कारण भाव हैं सुन्दर, पद तीर्थंकर का देते।
दशलक्षण को धारण करके, मुक्ति सुन्दरी वर लेते।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित का, आराधन हम करते हैं।
हो जाये यदि एक बार तो, चतुर्गति को हरते हैं।।
ऋषभ आदि श्री वीर जिनंदा, भावों से पूजन करता।
सच्ची श्रद्धा सच्ची भक्ति, से ही मानव सुख वरता।।
गौतम गणधर सप्त ऋषि, आदि का ध्यान लगाऊँगा।
विघ्नों का होगा विनाश, औ ऋद्धि सिद्धि को पाऊँगा।।
राम हनु भरतेश बाहुबलि, के पुरुषारथ याद करूँ।
पंच बालयति तीर्थंकर ध्या, मुक्तिपुरी को शीघ्र वरूँ।।
समवशरण में मानस्तम्भ हैं, सहस्र कूट जिन को वंदू।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष पा, कल्याणक से अभिनंदू।।
जिस भूमि को तीर्थंकर ने, लेकर जन्म पवित्र किया।
तीर्थ अयोध्या श्रावस्ती, आदि को हमने नमन किया।।

रानीला जी में प्रगट हुये, श्री आदिनाथ वंदन करता।
चाँदखेड़ी के ऋषभनाथ का ध्यान हृदय में नित धरता।।
देहरे के चंदा महावीर जी, सबकी विपदायें हरते।
श्री सम्मेदशिखर चंपापुर, औ सोनागिरि हृदय धरते।।
श्री नेमिनाथ जी मोक्ष गये, गिरिनार गिरि को वंदन है।
श्री आदिनाथ कैलाश गिरि की, मिट्टी बन गई चंदन है।।
जितने भी मुनिवर सिद्ध हुए, निर्वाण भूमि को नमन करूँ।
कर्म नाश कर जग का दुख हर, मैं भी मुक्ति स्वयं वरूँ।।
शुभ भावों से की गई पूजा, शुभ फल को ही देती है।
भक्ति अर्चन पूजन वंदन, संकट सब हर लेती है।।
मोह क्रोध तज पाप छोड़कर, निज का ही रूप निहारूँगा।
'स्वस्ति' जिन पूजन करके ही, प्रभु सम रूप सम्हारूँगा।।

दोहा

पूजन से प्रभु आपकी, रोम - रोम हर्षाये।
जिन पूजन का फल मिले, स्वर्ग मोक्ष को पाये।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु सरस्वती देवी, सोलहकारण भावना, दश धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम - अकृत्रिम जिन चैत्यालय, नंदीश्वर द्वीप सम्बधित जिन चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरिनार, चम्पापुरी आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, चतुर्विंशति तीर्थंकर, गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो, जिनेन्द्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जिन शासन जिन देव औ, जिन गुरु शीश नवाय।
वीतराग का पद मिले, मुक्ति सुन्दरी पाय।।

।। इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री नवदेवता पूजा

शंभू छंद "स्थापना"

निर्लिप्त निरंजन निराकार, निर्दोष हमारे जिनवर हैं।
हैं शान्त सनातन ध्यान मग्न, ज्योतिर्मय योगी जिनवर हैं।।
मेरा मन विष से भरा हुआ, अमृत मय करने आया हूँ।
नव देवों की भक्ति करने, शुभ थाल सजाकर लाया हूँ।।

दोहा

शक्ति मुझ में हो यदि, आ जाऊँ मैं पास।
नवदेवों की भक्ति से, पाऊँ दिव्य प्रकाश।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालय समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मन सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

चाल छंद (तर्ज : ए मेरे वतन के...)

मोही कीचड़ में फंसता, कर्मों का आस्रव करता।
मन मैल मेरा धुल जाये, जल ले पूजन को आये।।
नवदेवों को हम ध्यायें, जिनगुण निधियों को पायें।
सौभाग्य हमारा आया, शरणा मैं तेरी आया।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालयेभ्यः जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से वंदन करते, कर्मों का क्रंदन हरते।
शीतल हो जाऊँ देवा, मैं करूं आपकी सेवा।।
नवदेवों को हम ध्यायें...

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालयेभ्यः संसारताप विनशनाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा।

पद में आकुलता होती, सद्बुद्धि को वह खोती।
अक्षत मैं चरण चढ़ाऊँ, अक्षय पद पाने आऊँ।।
नवदेवों को हम ध्यायें, जिनगुण निधियों को पायें।
सौभाग्य हमारा आया, शरणा मैं तेरी आया।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालयेभ्यः अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूलों सम भोग लुभायें, मुझे अपने पास बुलायें।
पुष्पों से पूजा करता, मन काम भाव को हरता।
नवदेवों को हम ध्यायें...

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालयेभ्यः कामवाण निध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन के हम दीवाने, दिन रात फिरें हम खाने।
नैवेद्य वैद्य बन जावे, यह भूख मेरी मिट जावे।।
नवदेवों को हम ध्यायें...

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालयेभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन कर्मो से है काला, मन में होवे उजियाला।
दीपक लेकर मैं आया, सुरभित होवे यह काया।।
नवदेवों को हम ध्यायें...

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालयेभ्यः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिकूल जगत यह होवे, प्राणी सुख-दुख में रोवे।
कर्मों की धूप चढ़ाऊँ, कर्मों की धूम उड़ाऊँ।।
नवदेवों को हम ध्यायें...

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालयेभ्यः अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति का फल है अच्छा, आतम ही सबसे सच्चा।
फल से जग फल ना चाहूँ, फल की शुभ भेंट चढ़ाऊँ।।
नवदेवों को हम ध्यायें...

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालयेभ्यः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

साधन से साध्य को पावें, चरणों में अर्घ्य चढ़ावें।
हो जाये सौख्य बसेरा, मुक्ति का मिले सबेरा।।
नवदेवों को हम ध्यायें...

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालयेभ्यः अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सोरठा

देता है वरदान, धर्म तो अगणित रूप में।
बारम्बार प्रणाम, भक्ति से शक्ति मिले।।

चौपाई

श्रद्धा और समर्पण लाया, प्रभु पूजा को तेरी आया।
भाव शुद्ध मन पावन कर दो, शुद्ध गुणों से झोली भर दो।।1।।
दुनियां की यह भीषण ज्वाला, करती है आतम को काला।
आप जगत के पालन हारे, नैया मेरी करो किनारे।।2।।
चार घातिया घात के स्वामी, हो अरिहंत आप जगनामी।
समवशरण लगता है प्यारा, होता है यह जग से न्यारा।।3।।
दिव्य ध्वनि अमृत बरसाये, भक्तों का कल्याण कराये।
आठ कर्म को नाश दिया था,मुक्ति में जा वास किया था।।4।।

आत्म ज्ञान है रहित शरीरा, इसीलिये कहते हैं वीरा।
हैं छत्तीस गुणों के धारी, शिष्यों के संग पालनहारी।।5।।
दीक्षा और प्रायश्चित देते, भव्यों को सन्मार्ग दिखाते।
उपाध्याय हैं ज्ञान के सागर, ज्ञान से भरते सब की गागर।।6।।
सर्व साधु को नमन हमारा, तन मन से संयम को धारा।
है जिन धर्म जगत रखवाला, भव बंधन के तोड़े जाला।।7।।
जिन आगम का अमृत पीना, अध्यातम का आनंद लीना।
हैं जिन चैत्य भी पूज्य हमारे, भक्ति में हमें बनो सहारे।।8।।
चैत्यालय में प्रतिमा शोभे, भक्तों के तन मन को मोहे।
पंच परम ये देव हमारे, भक्त की नैया करो किनारे।।9।।
परमेष्ठी मुक्ति में जायें, हम भी शत-शत शीश नवायें।
शाश्वत धर्म की है बलिहारी, शाश्वत पद के देवन हारी।।10।।

दोहा

नवदेवों की भक्ति से, नव निधियाँ मिल जायें।
नव शक्ति को प्राप्त कर, शाश्वत सुख पा जायें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालयेभ्यः अनर्घ पद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शान्ति की छाया मिले, मिले ज्ञान का दान।
अर्पण पुष्पों का करूं, मिल जायें भगवान।।

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री पंच परमेष्ठी पूजन

शंभू छन्द

अरिहन्त हनन कर्मों का कर, शुभ समवशरण में बैठे हैं।
आठों कर्मों को नाश किया, बस निज आतम को लेखे हैं।।
आचार्य आचरण कर करके, शिष्यों को दीक्षा देते हैं।
पाठक साधू को नमन करें, संकट दुख सब हर लेते हैं।।

दोहा

पावन तन मन हो मेरा, वच पावन हो जाये।
परमेष्ठी पूजा करूँ, अपने हृदय बसाय।।

ॐ ह्रीं अरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठी समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

शंभू छन्द

निर्मल मन निर्मल वाणी से, जिनवर के गीत को गाता है।
पर मन मैला है भोगों में, यह भटक भटक भटकाता है।।
मन को पावन करने हेतु, जल ले पूजा को करते हैं।
हैं पंच परम परमेष्ठी प्रभू, सब कर्म मैल को हरते हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रह अरिष्ट निवारक श्री अरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधू पंच परमेष्ठिभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं क्रोध करूँ तन मन जलता, गल्ती पर गल्ती होती है।
कर्मों का ताप चढ़ा भगवान, पश्चात ये अँखियां रोती हैं।।
इस क्रोध ताप को दूर करूँ, हम क्षमा का चन्दन लाये हैं।
हे पंच परम परेष्ठी प्रभू, पूजा करके हर्षाये हैं।।

ॐ ह्रीं सर्व ग्रह अरिष्ट निवारक श्री अरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधू पंच परमेष्ठिभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थिर हो प्रभु निज ध्यान लीन, चंचलता दुख का कारण है।
अक्षय धन अक्षय पद होता, जग के सब दुःख निवारण हैं।।
मुक्ति पथ की अब राह मिले, अक्षय अक्षत हम लाये हैं।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, पूजा कर शीश झुकाये हैं।।

ॐ ह्रीं सर्व ग्रह अरिष्ट निवारक श्री अरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधू पंच परमेष्ठिभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

दीवाना भोगों का बनकर, चारों गतियों में भ्रमण किया।
पर प्यास तो अब तक बुझी नहीं, अब तुम चरणों का ध्यान किया।।
नहिं इन्द्रिय सुख की चाह मुझे, आतम सुख पाने आये हैं।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, चरणों में पुष्प चढ़ाये हैं।।

ॐ ह्रीं सर्व ग्रह अरिष्ट निवारक श्री अरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधू पंच परमेष्ठिभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इस तन में पेट बना ऐसा, निश दिन भोजन की मांग करे।
जिव्हा व्यंजन ढूँढे जग में, संयम आतम में सुःख भरे।।
जागृत कर्मो की भूख मिटे, निज ध्यान से रोग नशे सारे।
हे पंच परम परमेष्ठ प्रभु, नैवेद्य से पूजूँ पद थारे।।

ॐ ह्रीं सर्व ग्रह अरिष्ट निवारक श्री अरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधू पंच परमेष्ठिभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाहर के उजाले में भटके, अज्ञान अंधेरा अन्दर में।
इससे ही ध्यान नहीं लगता, चिन्ता है मन के समंदर में।।
शुभ सम्यक्ज्ञान का दीप जले, मुक्ति का पथ, जगमग होवे।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, अपने अज्ञान को हम खोवें।।

ॐ ह्रीं सर्व ग्रह अरिष्ट निवारक श्री अरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधू पंच परमेष्ठिभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन सुधारने का मौका, किन्तु कर्मों ने भटकाया।
पुरुषार्थ प्रबल मेरा भी नहीं, जग ने मुझको है अटकाया।।
कर्मों के नाशनहार प्रभु, तप करने की शक्ति दे दो।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव तरने की युक्ति दे दो।।

ॐ ह्रीं सर्व ग्रह अरिष्ट निवारक श्री अरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधू पंच परमेष्ठिभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम अखण्ड अविनाशी है, इसका आदि और अंत नहीं।
पल पल पर्याय बदलती हैं, मुक्ति के सिवा कोई पंथ नहीं।।
मुक्ति का फल पाने प्रभुवर, फल ले करके हम आये हैं।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, श्रद्धा से शीश झुकाये हैं।।

ॐ ह्रीं सर्व ग्रह अरिष्ट निवारक श्री अरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधू पंच परमेष्ठिभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं दीन हीन छोटा भी नहीं, है पुण्य का फल मानुष्य गति।
पुरुषार्थ करूँ सब कुछ होगा, पर बिगड़ गयी है मेरी मति।।
मति को सन्मति अब करना है, चरणों में अर्घ्य चढ़ायेंगे।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, हम डेरा यही जमायेंगे।।

ॐ ह्रीं सर्व ग्रह अरिष्ट निवारक श्री अरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधू पंच परमेष्ठिभ्यो अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

अरिहन्त सिद्धाचार्य जी, उपाध्याय का ध्यान।
साधु सहित सबको नमन, जयमाला गुणगान।।

तर्ज : शेर चाल "दे दी हमें आजादी..."

अरिहन्त देव चार कर्म, नाश किये हैं।
पाया है शुद्ध ज्ञान दिव्य, ज्ञान दिये हैं।।
कल्याण पंच भेद देव, आ के मनायें।
बरसे हैं रतन प्राणी, सभी हर्ष मनायें।।

आठों करम को नाश श्री, सिद्ध पद लिया।
तोड़ा जगत से नाता मुक्ति, वास जा किया।।
निज आत्मा से आत्मा का, ध्यान करे हैं।
आनन्द मय आनन्द में, आनन्द भरे हैं।।

शिक्षक को शिक्षा दीक्षा दें, आचार्य हमारे।
आचार धर्म का करें, शिष्यों के सहारे।।
ये धर्म की परम्परा को, आगे बढ़ाते।
आचार्य के चरणों में, हम तो शीश झुकाते।।

पाठक ने वीर वाणी, आत्मसात करी है।
पढ़ते औ पढ़ाते हैं ज्ञान, ज्योति जगी है।।
आगम प्रमाण बात करके, भेद खोलते।
दुर्नय को हटा पथ सुनय की, वाणी बोलते।।

जिनका है एक लक्ष्य शीघ्र, मुक्ति को पाना।
वे ध्यान करें ध्यान में ही, आत्म को जाना।।

करके तपस्या घोर, कर्म को हैं भगाते।
मन की करी है सिद्धि, नही समय गंवाते।।

पांचो ही देव सबके पाप, ताप को हरें।
आशीष मिले इनका तो हम, शाप को हरें।।
हम वन्दना औ अर्चना के, भाव से भरे।
शुभ भाव बना पूजा के,श्रद्धा में हैं खड़े।।

ॐ ह्रीं सर्व ग्रह अरिष्ट निवारक श्रीअरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधू पंच परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

भाव शुद्धि बुद्धि कुशल, प्रभु भक्ति से होये।
''स्वस्ति'' भक्ति को करे, सभी करम को खोये।।

मंडलोस्परिः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

''9 बार अथवा एक माला जाप करें''

श्री भक्तामर विधान पूजा प्रारम्भ

गीता छंद (तर्ज : प्रभु पतित पावन...)

आये जगत में आदि जिनवर, आदि तीर्थंकर भये।
करके तपस्या कर्म नाशे, सिद्ध पदवी पा गये।।
श्री मानतुंग ने भक्ति की जब, ताले सारे टूटते।
स्तोत्र भक्तामर रचा, कर्मों के बंधन छूटते।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभदेव! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री वृषभदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री वृषभदेव! अत्र मन सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

शंभू छंद

चारों गतियों में घूम-घूम, कर्मों को संचित कर लीना।
ये कर्म हमें दुख देते हैं, पूजा ने दुख को हर लीना।।
श्री आदिनाथ की भक्ति में, भक्तामर जी को पढ़ते हैं।
ऋद्धि सिद्धि को प्राप्त करें, दुख संकट पल में हरते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम स्वभाव है शुद्ध शांत, मन तो विकार से भरा हुआ।
इच्छायें नित्य तपाती हैं, प्रभु पूजा ने मन शांत किया।।
श्री आदिनाथ की...

ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवाय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंचल मन चंचल वचन प्रभो, काया को चंचल कर देते।
चंचलता में सुख ना पाया, सुख पाने अक्षत को लाते।।
श्री आदिनाथ की...

ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवाय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों ने चित्त में चिन्ता दी, चिन्ता ने चिता बना डाली।
मन शुद्ध होय तन शुद्ध होय, ले आया पुष्पों की थाली।।
श्री आदिनाथ की...

ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवाय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जो स्वाद भक्ति में आता है, वह व्यंजन में ना आयेगा।
भक्ति आतम सुख को देती, वह व्यंजन में ना पायेगा।।
श्री आदिनाथ की...

ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह की निद्रा में सोये, खुले नयनों से ना दिखता है।
सम्यग्दर्शन का दीप जले, तब ही आतम को लखता है।।
श्री आदिनाथ की...

ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवाय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये कर्म लुटेरे जिस दिन भी, जब पुण्य की गठरी लूटेंगे।
कोठी बंगला परिवार सभी, एकदम से पल में छूटेंगे।
श्री आदिनाथ की...

ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवाय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं रंग बिरंगे फल अनेक, किन्तु क्षण भर को सुख देते।
मुक्ति फल पाने की इच्छा, चरणों में ला कर फल धरते।।
श्री आदिनाथ की...

ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवाय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों के कष्ट सहे, फिर भी मन रागों में फंसता।
जो त्याग करे जग के सुख को, वह तो अनर्घ्य पद को वरता।।
श्री आदिनाथ की...

ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवाय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ अष्ट दल कमल पूजा

(वसन्ततिलका-छन्द)

भक्तामर - प्रणत मौलि - मणि - प्रभाणा -
मुद्योतकम् - दलित - पाप - तमो वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य - जिन - पाद - युगं - युगादा -
वालम्बनं - भवजले - पततां - जनानाम्।।1।।

शंभू छंद

भक्त झुके चरणों में आके, मुकुट मणि से निकली प्रभा।
पाप तिमिर सब नाश हो गया, दिव्य दिवाकर ज्ञान सभा।।
भव समुद्र में डूब रहे जो, अवलंबन आपहि देते।
आदि जिन के चरण कमल को, बंदन बार-बार करते।।1।।

ॐ ह्रीं विश्वविध्नहराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

यः संस्तुतः सकल - वाङ्मय - तत्त्व - बोधा -
दुद्भूत - बुद्धि - पटुभिः सुर - लोक - नाथैः।
स्तोत्रै र्जगत् - त्रितय - चित्त - हरै - रूदारैः
स्तोष्ये किलाह - मपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्।।2।।

सकल तत्त्व के ज्ञाता हैं जो, बुद्धि पटु हर कार्य करें।
वह सुरेन्द्र भी स्तुति करता, तीन लोक का चित्त हरें।।
हैं जयवन्त जिनेश्वर जग में, हम जयकार लगाते हैं।
स्तुति वन्दन भक्ति करके, चरणन शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं नानामरसंस्तुताय सकलरोगहराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय स्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धया विनाऽपि विबुधार्चित - पाद - पीठ,
स्तोतुं समुद्यत - मति - र्विगत - त्रपोऽहम्।

बालं विहाय जल - संस्थित - मिन्दु -बिम्ब -
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम।।3।।
सुर से अर्चित चरण कमल हैं, ज्ञानी जग में कहलाते।
मंद बुद्धि मैं स्तुति करता, नहि लज्जा नहि शर्माते।।
जल में चन्द्र की छाया पाने, बालक ही जिद करता है।
बुद्धिमान सच्चाई जाने, वह तो कर्म को हरता है।।3।।

ॐ ह्रीं मत्यादिसुज्ञानप्रकाशनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्तुं गुणान् गुण - समुद्र! शशाँक - कान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरु - प्रतिमोऽपि बुद्धया।
कल्पान्त - काल - पवनोद्धत - नक्र - चक्रं
को वा तरीतु - मल -मम्बु - निधिं भुजाभ्याम्।।4।।
हे गुणसागर चन्द्र कांति सम, रूप शांति बरसाता है।
सुर गुरु भक्ति करने जो आता, पूरी ना कह पाता है।।
प्रलय काल की पवन साथ में, मगर समूह जहाँ होवे।
कौन सिन्धु को निज हाथों से, तैर किनारा पा लेवे।।4।।

ॐ ह्रीं नानादुःख समुद्रतारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोऽहं तथापि तव भक्ति - वशान्मुनीश,
कर्तुं स्तवं विगत - शक्ति - रपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्म - वीर्य - मवि - चार्य मृगी मृगेन्द्रं
नाभ्येति किं निज-शिशोः परि-पाल-नार्थम्।।5।।
शक्ति नहीं भक्ति के बल पर, स्तुति करने आया हूँ।
लखकर मुद्रा तेरी जिनवर, मन ही मन हर्षाया हूँ।।
निज शिशु की रक्षा के हेतु, मृगि विचार नहीं करती।
मृगपति सन्मुख जाकर के वो, शिशु रक्षाकर दुख रहती।।5।।

ॐ ह्रीं अक्षिरोगहराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अल्पश्रुतं श्रुत - वतां परि - हास - धाम,
त्वद् - भक्ति - रेव मुखरी - कुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल - मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र - चारु - कलिका - निक - रैक - हेतु।।6।।

कम ज्ञानी हूँ ज्ञानी जनों से, हंसने का मैं पात्र बना।
किन्तु भक्ति प्रेरित करती, अंदर भक्ति का भाव घना।।
आम्र वृक्ष में बौर आए जब, कोयल स्वयं ही बोल पड़े।
इसी तरह जिनवर भक्ति में, हम भी चरणन आन खड़े।।6।।

ॐ ह्रीं अयाचितार्थप्रतिपादनशक्ति सहिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्वत्संस्तवेन भव - सन्तति सन्निबद्धं,
पापं क्षणात् - क्षय - मुपैति शरीर - भाजाम्।
आक्रान्त - लोक - मलि - नील - मशेष - माशु,
सूर्यांशु - भिन्न - मिव शार्वर - मन्ध - कारम्।।7।।

भव अनेक के पाप के बंधन, स्तवन से कट जाते हैं।
दुष्ट कर्म सब शीघ्रहि भागे, नहि संताप सताते हैं।।
तीन लोक में भंवरे के सम, तम छाया चहुँ और घना।
सूर्य किरण जैसे ही निकले, अंधकार सम्पूर्ण हना।।7।।

ॐ ह्रीं सकलपापफलकष्ट निवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनु - धियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी - दलेषु
मुक्ता - फल द्युति-मुपैति ननूद - बिन्दुः।।8।।

ऐसा मैंने माना तुमको, और स्तुति आरम्भ करी।
तीन लोक का चित्त हरेगी, भक्ति तेरी शांति भरी।।
कमल पत्र पर जल बिन्दु, मोती सम उपमा पाती हैं।
वैसी स्तुति मेरी जिनवर, सज्जन मन हर्षाती हैं।।8।।

ॐ ह्रीं अनेकसंकटसंसारदुःख निवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

लघु भक्त हूँ आपका, आदिनाथ भगवान।
अर्घ्य चरण अर्पित करूँ, बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं अष्टदल कमलाधिपतये श्री वृषभजिनाय प्रथम वलय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्रीफल चढ़ायें)

अथ षोडश दल कमल पूजा

आस्तां तव स्तवन - मस्त - समस्त - दोषं,
त्वत् - संकथाऽपि जगतां दुरि - तानि हन्ति।
दूरे सहस्त्र - किरणः कुरुते प्रभैव,
पद्मा - करेषु जलजानि विकास - भाञ्जि।।9।।
स्तवन तेरा सब दोषों को, बस क्षण भर में दूर करे।
कथा आपकी जो भी सुनता, जनम जनम के पाप हरे।।
वह हजार किरणों वाला रवि रहता है तो दूर गगन।
किन्तु किरण के ही प्रभाव से, खिल जाते हैं कमल मगन।।9।।

ॐ ह्रीं सकलमनोवांछितफलदात्रे क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नात्यद् - भुतं भुवन - भूषण भूतनाथ!,
भूतै - र्गुणै - र्भुवि भवन्त - मभिष्टु - वन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्या - श्रितं य इह नात्म समं करोति।।10।।
तीन भुवन के भूषण हो तुम, सब प्राणी के नाथ भी हो।
प्रभू आप सम इस धरती पर, गुण वाला दूजा ना हो।।

आश्रित सेवक जो है प्रभु, अपने सम उसको कर लेना।
नहि करो तो नहीं प्रयोजन, विनती इतनी सुन लेना।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हज्जिनस्मरणसम्भूताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्ट्वा भवन्त - मनि - मेष - विलोक - नीयम्,
नान्यत्र तोष - मुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकर - द्युति - दुग्ध - सिन्धोः
क्षारं जलं जल - निधे -रसितुं क इच्छेत्।।11।।

प्रभु निरन्तर लखने योग्य हो, भक्त आपका दर्श करें।
नहि सन्तोष कही लख करके, पावन दर्श ही पाप हरें।।
क्षीर सिन्धु इन्दु सम जल पी, खारा पानी कौन पिये।
भक्त हृदय में आप बसे हो, और कौन अब आय हिये।।11।।

ॐ ह्रीं सकलतुष्टिपुष्टिकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यैः शान्त - राग - रुचिभिः परमाणु - भिस्त्वं,
निर्मापितस् - त्रिभुवनैक - ललामभूत!।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्याम्,
यत्ते समान - मपरं न हि रूप - मस्ति।।12।।

शान्त व सुन्दर जितने अणु थे, उनसे हुआ है तव निर्माण।
थे उतने ही अणु धरती पर, बाकी सब थे वे निष्प्राण।।
अद्वितीय सुन्दर जिनवर को, देख आँख ना थकती है।
नहीं आपसा सुन्दर कोई, आंख कहीं ना जाती है।।12।।

ॐ ह्रीं वांछित रूप फल शक्तये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्त्रं क्व ते सुर - नरो - रग - नेत्र - हारि,
निःशेष - निर्जित - जगत् - त्रितयोप - मानम्।

बिम्बं कलंक - मलिनं क्व निशा - करस्य,
यद् - वासरे भवति पाण्डु - पलाश - कल्पम्।।13।।
अनुपम सुन्दर मुख वाले जिन, सुर नर नेत्र हरण कीना।
तीन जगत उपमायें जीती, अनुपम नाम को पा लीना।।
है कलंक के सहित चंद्रमा, कहाँ तुलना ये कर सकते।
दिन हो तो फीका पलाश सा, कोई भी ना उसको लखते।।13।।

ॐ ह्रीं लक्ष्मीसुखविधायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण - मण्डल - शशाँक - कला - कलाप,
शुभ्रा गुणास् - त्रिभुवनं तव लंघयन्ति।
ये संश्रितास् - त्रिजग - दीश्वर नाथ - मेकम्,
कस्तान् निवार - यति संचरतो यथेष्टम्।।14।।
पूर्ण चन्द्र जो कला सहित है, स्वच्छ चांदनी बिखर रही।
इसी तरह तीनों लोकों में, प्रभु गुण बगिया महक रही।।
तीन जगत में जिनगुण विचरे, जगन्नाथ पाया आधार।
रोक कोई भी ना सकता है, शक्तिहीन ना करें प्रहार।।14।।

ॐ ह्रीं भूतप्रेतादिभयनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चित्रं कि - मत्र यदि ते त्रिदशांग - नाभिर्
नीतं मना - गपि मनो न विकार - मार्गम्।
कल्पान्त - काल - मरुता चलिता - चलेन,
किं मन्द - राद्रि - शिखरं चलितं कदाचित्।।15।।
यदि देवियों ने प्रभु का मन, डिगा नहीं जो पाया है।
नहि आश्चर्य है कोई इसमें, लज्जित हो दुख पाया है।।
प्रलय काल की वायु चलती, पर्वत गिर-गिर जाते हैं।
किन्तु सुमेरू ना हिलता है, मस्तक फिर झुक जाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं मेरुवन्नोबलकरणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

निर्धूम - वर्ति - रप - वर्जित - तैल - पूरः,
कृत्स्नं जगत् - त्रय - मिदं प्रकटी - करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिता - चलानाम्,
दीपोऽपरस्त्व - मसि नाथ! जगत् - प्रकाशः।।16।।

धूमबत्ती और तेल नहीं है, फिर भी दीपक कहलाते।
तीन जगत को करें प्रकाशित, मुक्ति पथ को दिखलाते।।
वायु ऐसी तेज चल रही, शिखर गिरी का उड़ जाये।
हो अपूर्व दीपक प्रभु जग में, कोई नहीं बुझा पाये।।16।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यलोकवंशकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

नास्तं कदाचि - दुप - यासि न राहु - गम्यः
स्पष्टी - करोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भो - धरो -दर - निरुद्ध महा - प्रभावः
सूर्याति - शायि - महि - मासि मुनीन्द्र! लोके।।17।।

अस्त ना होते उदय ना होते, और राहु ना ग्रस पाता।
सदा प्रकाशित करके जग को, कहलाते प्रभु सुख दाता।।
घने मेघ भी ढंक सकते ना, ना प्रभाव भी कम होता।
अतिशय महिमाशाली दिनकर, चरणों में सर झुक जाता।।17।।

ॐ ह्रीं सर्वरोगप्रतिरोधकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

नित्यो - दयं दलित - मोह - महान्ध - कारं,
गम्यं न राहु - वदनस्य न वारि - दानाम्।
विभ्राजते तव मुखब्ज - मनल्प - कान्ति,
विद्यो - तयज् - जग - दपूर्व - शशाँक - बिम्बम्।।18।।

सदा उदित रह करके जिनवर, मोह महातम नष्ट करें।
राहु गम्य ना मेघ हैं ढंकते, भक्तों का अज्ञान हरें।।
अधिक कांतिमय रूप है जिनका, मुख मण्डल भी दमक रहा।
हे अपूर्व जग के शशांक तुम, ये जग तुमसे चमक रहा।।18।।

ॐ ह्रीं शत्रुसैन्यस्तम्भकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

किं शर्वरीषु शशि - नाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन् - मुखेन्दु -दलितेषु तमःसु नाथ!।
निष्पन्न - शालि - वन - शालिनि जीव - लोके,
कार्यं कियज् - जलधरै - र्जलभार - नम्रैः।।19।।

दिव्य तेजमय मुख मंडल जिन, रवि शशि जैसा भाषित है।
फिर दिन में रवि निशा चन्द्र से, होती क्यों वो शासित है।।
हरे भरे खेतों में फसलें, लहर लहर लहराती हैं।
नहीं काम जल मेघों का फिर, स्वयं स्वयं हर्षाती हैं।।19।।

ॐ ह्रीं सकलकालुष्य दोष निवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृताव - काशं,
नैवं तथा हरि - हरादिषु नायकेषु।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काच - शकले किरणा - कुलेऽपि।।20।।

जैसा ज्ञान तुम्हारा जिनवर, सच्चा पथ दिखलाता है।
हरि हरादि में नहीं है वैसा, बस अज्ञान बढ़ाता है।।
महारत्नों में किरणें जैसी, नहीं कांच में होती हैं।
भक्ति आपकी मेरे जिनवर, सब कर्मों को धोती हैं।।20।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्रकाशितलोकालोकस्वरूपाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्ये वरं हरि - हरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोष - मेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन् मनो हरित नाथ! भवान्तरेऽपि।।121।।

शेर चाल (तर्ज - दे दी हमें आजादी)

है श्रेष्ठ जग में हर हरादि, को भी देखना।
सन्तोष पाया आप में, बस कुछ ना लेखना।।
धारती पे आपके समान कोई नहीं है।
भव भव में मन को करते हरण, आप सही हैं।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषहरशुभदर्शनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्व - दुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दशति भानि सहस्त्र - रश्मिम्,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुर - दंशु - जालम्।।22।।

शत स्त्रियों ने सैकड़ों ही, पुत्र जने हैं।
ना दूसरा है आप जैसा कर्म हने हैं।।
चारों दिशा नक्षत्र धारें सूर्य को नहीं।
है पूर्व दिशा जन्म देती, बात है सही।।22।।

ॐ ह्रीं अद्भुतगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

त्वा - मा - मनन्ति मुनयः परमं पुमांस
मादित्य - वर्ण - ममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वा - मेव सम्य - गुप - लभ्य जयन्ति मृत्युम्,
नान्यः शिवः शिव - पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः।।23।।

तुम ही परम पुरुष हो, प्रभु मानते मुनि।
रवि वर्ण वाले आप हो, तम की उड़े धुनि।।

जो आपको पाता है, मृत्यु पर विजय करे।
शिव मार्ग आप ही बताये, कार्य सब सरे।।23।।

ॐ ह्रीं प्रेतबाधानिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

त्वामव्ययं विभु - मचिन्त्य - मसंख्य - माद्यं,
ब्रह्माणमीश्वर - मनन्त - मनंग - केतुम्।
योगीश्वरं विदित - योग - मनेक - मेकं,
ज्ञान - स्वरूप - ममलं प्रवदन्ति सन्तः।।24।।

अव्यय असंख्य आदि हो, अचिन्त्य भी तुम्हीं।
ब्रह्माण हो ईश्वर अनन्त, रूपवान भी।।
हो योगियों के ईश और, एकानेक भी।
हो ज्ञान से निर्मल तुम्ही, मुनि कहते हैं सभी।।24।।

ॐ ह्रीं सहस्रनामाधीश्वराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

नाम मंत्र को जप रहा, कर्म होयेंगे दूर।
अर्घ्य चढ़ा भक्ति करूँ, भरो सौख्य भरपूर।।

ॐ ह्रीं षोडस दल कमलाधिपतये श्री वृषभदेव जिनेन्द्राय द्वितीय वलय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्रीफल चढ़ायें)

अथ चतुर्विंशति दल कमल पूजा

बुद्धस्त्व - मेव विबुधार्चित - बुद्धि - बोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवन - त्रय - शंकरत्वात्।
धातासि धीर! शिव - मार्ग विधे - र्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि।।25।।
तुम बुद्ध हो स्वर्गों के देव, अर्चना करें।
शंकर बने हो शांति से, अशांति को हरें।।
शिव मार्ग बता के बने हो, आप विधाता।
उत्तम पुरुष भी आप हो, मैं शीश झुकाता।।25।।

ॐ ह्रीं षड्दर्शनपारगंताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

तुभ्यं नमस् - त्रिभुव - नार्ति - हराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षिति - तलामल - भूषणाय।
तुभ्यं नमस् - त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि - शोषणाय।।26।।
तीनों भुवन के दुःखहारी, नमस्कार है।
भूषण बने त्रिलोक के, जी नमस्कार है।।
तीनों जगत के परम ईश, नमस्कार है।
भव सिन्धु को सोखते जी, नमस्कार है।।26।।

ॐ ह्रीं नानादुःखविलीनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणै - रशेषै,
स्त्वं संश्रितो निरवकाश - तया मुनीश!
दोषै - रुपात्त - विविधाश्रय - जात - गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिद् - पीक्षितोऽसि।।27।।

चौपाई छन्द

नहिं आश्चर्य है, हे जिनवर जी, दोष ना पाये, तुम आश्रय जी।
दोष विविध, आश्रय को पाये, स्वप्न में भी ना, प्रभु के आये।।27।।

ॐ ह्रीं सकलदोषनिर्मुक्ताय क्लीं महावीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्चै - रशोक - तरु - संश्रित - मुन्मयूख,
माभाति रूप - ममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत् - किरण - मस्त - तमो - वितानं,
बिम्बं रवे - रवि पयोधर - पार्श्व - वर्ति।।28।।

तरू अशोक ऊँचा बतलाया, निर्मल रूप प्रभु का भाया।
किरणों से तम दूर भागता, मेघ बीच ज्यों सूर्य झांकता।।28।।

ॐ ह्रीं अशोकतरुविराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहासने मणि - मयूख - शिखा - विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनका - वदातम्।
बिम्बं वियद् - विलस - दंशु - लता - वितानम्,
तुंगो-दयाद्रि-शिर-सीव सहस्त्र-रश्मेः।।29।।

सिंहासन मणियों संग प्यारा, उस पर जिन वपु शोभित न्यारा।
रवि बिम्ब किरणों से शोभित, तम हारी जन जन का मोहित।।29।।

ॐ ह्रीं मणिमुक्ता खचित सिंहासन प्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्दा - वदात - चल चामर - चारू - शोभम्,
विभ्राजते तब वपुः कल - धौत - कान्तम्।
उद्यच्छशांक - शुचि - निर्झर - वारिधार,
मुच्चैस्तटं - सुरगिरे - रिव शात - कौम्भम्।।30।।

स्वर्णमयी तन कान्तिवाला, कुन्द चमर सिर ढुरने वाला।
स्वर्ण मेरू सम जिनवर तन है, झरना सम ही ढुरे चमर हैं।।30।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिचामर प्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महावीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्र - त्रयं तव विभाति शशांक - कान्त -
मुच्चैः स्थितं स्थगित - भानुकर - प्रतापम्।
मुक्ताफल - प्रकर - जाल - विवृद्ध - शोभम्,
प्रख्या - पयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्।।31।।

चन्द्रकांति सम छत्र त्रय हैं, रवि प्रताप को रोके तय हैं।
मोती झालर शोभ बढ़ाये, तीन जगत के ईश बताये।।31।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय प्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गम्भीर - तार - रव - पूरित - दिग्विभागस्
त्रैलोक्य - लोक - शुभ - संगम - भूति - दक्षः।
सद् - धर्मराज - जय - घोषण - घोषकः सन्,
खे दुन्दुभि - र्ध्वनति ते यशसः प्रवादी।।32।।

सभी दिशा दुंदुभि बजती हैं, जिनवर के गुण को कहती हैं।
धर्मराज की जय जय करती, यश गाथा गा पाप को हरती।।32।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यविधयिने क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दार - सुन्दर - नमेरु - सुपारि - जात,
सन्तान - कादि - कुसुमोत्कर - वृष्टि - रूद्धा।
गन्धोद - बिन्दु - शुभ -मन्द - मरुत् - प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा।।33।।

कल्पवृक्ष की कलियां झरती, जल बिन्दु और वायु चलती।
श्री जिनेन्द्र की झरती वाणी, जीवों को है यह कल्याणी।।33।।

ॐ ह्रीं समस्तजाति पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शुम्भत् - प्रभा -वलय - भूरि - विभा - विभोस्ते,
लोक - त्रये द्युतिमतां द्युति - मा - क्षिपन्ती।
प्रोद्यद् - दिवाकर - निरन्तर - भूरि - संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशा-मपि सोम - सौम्याम्।।34।।

तन भामण्डल का उजियारा, दूर करे जग का अंधियारा।
कोटि सूर्य औ चन्द्र मन्द हैं, जिन दर्शन से मन आनन्द हैं।।34।।

ॐ ह्रीं कोटिभास्कर प्रभामंडितभामण्डल प्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्गा - पवर्ग - गम - मार्ग - विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म - तत्त्व - कथनैक - पटुस्, त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनि - र्भवति ते विशदार्थ - सर्व-
भाषा - स्वभाव - परिणाम - गुणैः प्रयोज्यः।।35।।

स्वर्ग मोक्ष की खोज करी है, वाणी आगम तथ्य भरी है।
दिव्य ध्वनि सब ज्ञान कराये, भाषा स्वयं स्वयं परिणाये।।35।।

ॐ ह्रीं जलधर पटलगर्जित सर्वभाषात्मक योजन प्रमाण दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य युक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उन्निद्र - हेमनव - पंकज - पुञ्ज - कान्ति,
पर्युल - लसन् - नख - मयूख शिखभि - रामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परि-कल्प - यन्ति।।36।।

दोहा

स्वर्ण कमल की कांति सम, नख की कांति पाये।
जहाँ चरण जिनवर धरे, देवनि कमल रचाये।।36।।

ॐ ह्रीं पादन्यासे पद्मश्रीयुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्थं यथा तव विभूति - रभूज् - जिनेन्द्र!
धर्मोप - देशन - विधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रह - गणस्य विकासिनोऽपि।।37।।

महिमा जिनवर आपकी, नहीं दूजे में होय।
रवि उजाला ज्यों करें, नहिं ग्रहों में होय।।37।।

ॐ ह्रीं धर्मोपदेशसमये समवसरणादिलक्ष्मीविभूतिविराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्च्योतन् - मदाविल - विलोल - कपोल - मूल -
मत्त - भ्रमद् - भ्रमर - नादविवृद्ध - कोपम्।
ऐरा - वताभ - मिभ - मुद्धत - मा - पतन्तं
दृष्ट्वा भयंभवति नो भव - दाश्रितानाम्।।38।।

शंभू छन्द
(तर्ज - भला किसी का कर सको...)

हो मदमत्त कपोल से झरता, मद पर भौंरे आते हों।
क्रोधित रूप भयंकर दिखता, काल सामने पाते हो।।
ऐसा ऐरावत हाथी भी, यदि सामने आ जाये।
देख तुम्हें छुटकारा मिलता, नाथ शरण जो पा जाये।।38।।

ॐ ह्रीं हस्त्यादिगर्वदुरभयनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भिन्नेभ - कुम्भ - गल - दुज्जवल - शोणिताक्त,
मुक्ताफल - प्रकर - भूषित - भूमिभागः।
बद्ध - क्रमः - क्रम - गतं हरिणा - धिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम - युगा - चल - संश्रितं ते।।39।।

छिन्न भिन्न गण्डस्थल गज का, उज्ज्वल रक्त भी बहता है।
गजमोती से भूषित भूमि, सिंह कभी ना डरता है।।
ऐसा अधिपति सामने आये, पर हमला ना करता है।
प्रभु चरणों का आश्रय पाकर, भक्त कष्ट को हरता है।।39।।

ॐ ह्रीं युगादिदेवनाम प्रसादात् केशरीभय निवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पान्त - काल - पवनोद्धत - वह्नि - कल्पम्,
दावानलं ज्वलित - मुज्जल - मुत्स्फुलिंगम्।
विश्वं जिघत्सु - मिव सम्मुख - मापतन्तं,
त्वन्नाम - कीर्तन - जलं शमयत्यशेषम्।।40।।

प्रलय काल की वायु उद्धत, दावानल भी जलती है।
चिंगारी उड़ उड़ चहुँ दिश में, जा जा करके गिरती हैं।।

विश्व को भक्षण कर लेगी यह, ऐसे सामने आती है।
किन्तु आपके नाम मंत्र से, वह तुरन्त बुझ जाती है।।40।।

ॐ ह्रीं संसाराग्निताप निवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्तेक्षणं समद - कोकिल - कण्ठ - नीलं,
क्रोधोद्धतं फणिन - मुत्फण - मा - पतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्त - शंकस्-
त्वन्नाम - नाग - दमनी - हृदि यस्य पुंसः।।41।।

कोकिल कंठ आँख में गुस्सा, क्रोध से फण को पटक रहा।
तेजी से वह आगे आता, बार-बार फण झटक रहा।।
नाग दमनी सम नाम आपका, जो भी हर क्षण जपता है।
ऐसे सर्प के सर पर पग रख, आगे वह बढ़ जाता है।।41।।

ॐ ह्रीं त्वनामनागदमनीशक्ति सम्पनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वल्गत्तुरंग - गज - गर्जित - भीमनाद -,
माजौ बलं बलवता - मपि भूपतीनाम्।
उद्यद् - दिवाकर - मयूख - शिखा - पविद्धं,
त्वत् - कीर्तनात्तम इवाशु भिदा - मुपैति।।42।।

अश्वध्वनि गज गर्जित होवें, शोर भयंकर होता है।
बलशाली नृप आगे बढ़कर, वार निरन्तर करता है।।
रवि तेज सम भूपति आकर, जिसको हर क्षण सता रहा।
नाम आपका लेते शीघ्रहि, उस राजा को भगा रहा।।42।।

ॐ ह्रीं संग्राम मध्ये क्षेमंकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्ताग्र - भिन्न - गज - शोणित - वारि - वाह -
वेगा - वतार - तरणा - तुर - योध - भीमे।
युद्धे जयं विजित - दुर्जय - जेय -पक्षास् -
त्वत्पाद - पंकज - वना - श्रयिणो लभन्ते।।43।।

भालों से गज को मारा है, रक्त की नदिया बहती है।
योद्धा उसमें तैर के आते, मृत्यु सामने दिखती है।
उस अजेय को जीत भक्त वह, नाथ का आश्रय जो पाये।
चरण कमल की महिमा है ये, चरण कमल में झुक जाये।।43।।

ॐ ह्रीं सर्वभयनिवारणाय शांतिविधायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अम्भो - निधौ क्षुभित - भीषण - नक्र - चक्र-
पाठीन - पीठ - भय - दोल्वण - वाड - वाग्नौ।
रंग - तरंग - शिखर - स्थित - यान - पात्रास्-
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति।।44।।

सिन्धु क्षुभित भीषण लहरें हैं, जाकर शिखर से टकराती।
मगरमच्छ धड़ियाल हैं क्रोधित, बडवानल भी जल जाती।
शिखर पे स्थिर उस जहाज को, कोई नहीं बचा पाये।
जाप करें जिनदेव आपका, वह भी दुःख से बच जाये।।44।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्रकाशितलोकालोकस्वरूपाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उद्भूत - भीषण - जलोदर - भार - भुग्नाः,
शोच्यां दशा - मुप - गताश्च्युत - जीवि - ताशा।
त्वत् - पाद - पंकज - रजोऽमृत - दिग्ध - देहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज - तुल्य - रूपाः।।45।।

भीषण रोग से पीड़ित है जो, और जलोदर से झुकता।
आशा नहीं है जीवन की औ, मृत्यु राह को वो तकता।।
किन्तु आपके चरण कमल की, धूल को तन पर लगा लिया।
कामदेव सम सुन्दर जग में, रूप को निश्चित धार लिया।।45।।

ॐ ह्रीं दाहतापजलोदराष्ट सान्निपातादिरोगहराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आपादकण्ठ - मुरु - श्रृंखल - वेष्टितांगा,
गाढ़ं बृहन् - निगड - कोटि - निघृष्ट - जंघाः।

त्वन् - नाम - मन्त्र - मनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत बन्ध - भया भवन्ति।।46।।
सिर से पग तक बेड़ी बंधी है खींच खींच कर कसी हुई।
जांघे छिली अति दुख पाता, घोर वेदना उसे हुई।।
ऐसा नर यदि नाम आपका, नित्य निरन्तर जपता है।
बंध रहित हो बेड़ी टूटें, उसको भी सुख मिलता है।।46।।

ॐ ह्रीं नानाविध कठिनबन्धन दूरकरणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मत्त - द्विपेन्द्र - मृगराज - दवान - लाहि-
संग्राम - वारिधि - महोदर - बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाश - मुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तव - मिमं मतिमा - नधीते।।47।।
सिंह द्विपेन्द्र अग्नि वारिधि औ, युद्ध जलोदर बंधन हैं।
गुण स्तवन जो करे आपका, होता सुख अभिनन्दन है।।
अष्ट भयों का नाश करे वह, सुख सागर को पाता है।
भीषण से भीषण कष्टों को, क्षण में दूर भगाता है।।47।।

ॐ ह्रीं बहुविधिविघन विनाशनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तो - त्रस्त्रजं तव जिनेन्द्र! गुणै र्निबद्धां,
भक्त्या मया विविध - वर्ण - विचित्र - पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ - गता - मजस्त्रं,
तं ''मानतुंग'' - मवशा समुपैति लक्ष्मीः।।48।।
हे जिनेन्द्र गुणरूपी माला, आज बनाकर लाया हूँ।
सुन्दर सुन्दर गुण पुष्पों से, इसे सजाकर लाया हूँ।
''मानतुंग'' के ही जैसे वह , मुक्ति सुन्दरी वर लेंगे।
कह 'स्वस्ति' श्रद्धा के संग जो, इसे कंठ में पहनेंगे।।48।।

ॐ ह्रीं सकलकार्यसाधनसमर्थाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

रोग शोक संकट हरो, करो शांति का दान।
अर्घ्य समर्पण भाव से, बारम्बार प्रणाम।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति अष्टाधिक कमलाधिपतये श्री वृषभजिनाय तृतीय वलय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्रीफल चढ़ायें)

ऋद्धि अर्घ

1. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सभिण्णसोदाराणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयमबुद्धणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तियबुद्धणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ऋजुमदीणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुशलाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वणपित्ताणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

22. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
23. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
25. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
26. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
27. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
28. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
29. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
30. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
31. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपरक्कमाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
32. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभचारीणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
33. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
34. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहिपत्ताणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
35. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
36. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
37. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
38. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मनबलीणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
39. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
40. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
41. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
42. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
43. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
44. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
45. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अख्खीणमहाणसाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
46. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
47. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसिद्धायदणाणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
48. ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदिमहावीर वड्ढमाण बुद्धिरिसीणं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप - ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्रीवृषभनाथ तीर्थंकराय नमः।

जयमाला

दोहा

मानतुंग के जैसे ही, भक्ति भाव बनाय।
उनके जैसे हम बनें, शत-शत शीश झुकाय।।

पद्धरि छंद

श्री आदिनाथ को नमस्कार, श्री ऋषभनाथ को नमस्कार।
भक्तों के पालन हार आप, नित भक्त करें जिनवर का जाप।।1।।

युग के आदि में प्रभु आये, कल्याणक इंद्र ने मनवाये।
वैभव चरणों में झुकता था, ना पाप कहीं भी रूकता था।2।।

चहुँ दिश में सुख की बरसा थी, बस आपके नाम की चर्चा थी।
राजा बन न्याय किया करते, सबके कष्टों को भी हरते।।3।।

असि मसि कृषि का उपदेश दिया, जीवन जीना भी सिखा दिया।
शुभ पुत्र भरत औ बाहुबली, तज दी संसार की सभी गली।।4।।

ब्राह्मी सुन्दरी दीक्षा लेती, नारी को भी शिक्षा देती।
प्रभु बनने को वन जा पहुंचे, फिर त्याग की बगिया को सींचे।।5।।

फिर केवल ज्ञान को प्रगटाया, कर्मों का पर्वत विघटाया।
जा समवशरण में बैठे थे, आतम से आतम देखे थे।।6।।

सबको सच्चा उपदेश दिया, भक्तों ने सम्यग्ज्ञान लिया।
मुक्ति के आप बने स्वामी, तुम ही हो प्रभु अन्तर्यामी।।7।।

भक्तों के नाथ सहारा हो, मुक्ति के आप किनारा हो।
आठों कर्मों का नाश किया, मुक्ति में जाकर वास किया।।8।।

जिनवर की भक्ति जो करते, कर्मों को अपने वे हरते।
श्री मानतुंग भक्ति गाते, तालों को अपने तुड़वाते।।9।।

जब राजा क्रोधित होता है, फिर तालों में बंद करता है।
किन्तु मुनिवर मन मगन लीन, कर्मों को करते जीर्ण शीर्ण।।10।।

फिर ध्यान छोड़ जिन ध्याया था, श्री आदि प्रभु गुण गाया था।
चक्रेश्वरी माता दासी हैं, जिनवर दर्शन की प्यासी हैं।।11।।

जो आदिनाथ पूजा करते, ये उनके कष्टों को हरते।
जब मुनिवर जी ने भक्ति की, तालों से उनको मुक्ति दी।।12।।

रचना भक्तामर होती है, पुण्यों की खेती बोती है।
राजा भी आकर झुकता है, मुनिवर को वंदन करता है।।13।।

हुई जैन धर्म की जयकारा, अज्ञान सभी का था हारा।
भक्तामर पाठ है शक्तिमान, ऋद्धि सिद्धि का करो दान।।14।।

दीपक जिनवर को बतलायें, तूफान जिसे ना बुझा पायें।
अठ प्रातिहार्य का वर्णन है, करें आदि प्रभु अभिनंदन है।।15।।

जो पाठ करें भक्तामर का, दुख भाग जाये जो है तन का।
हाथी सिंह भय को दूर करें, बीमारी तन की ठीक करें।।16।।

जो युद्ध करे वह विजय पाये, मन चिंता को भी यह हटाये।
सागर का भय भी दूर करे, बंधन से भी यह मुक्त करे।।17।।
उत्कृष्ट पदों का दाता है, सम्मान भी यह दिलवाता है।
ऋद्धि सिद्धि भी आयेगी, धन संपति भी मिल जायेगी।।18।।

खुशहाली घर में वास करे, कर्मों के कांटे आप हरे।
महिमा भक्तामर बतलायी, श्रद्धा से शक्ति भी आयी।।19।।

संस्कृत पाठ है मूल कहा, पढने में हो आनंद अहा।
भावार्थ समझ कर पढ़ना है भक्ति की सीढ़ी चढ़ना है।।20।।

अड़तालीस व्रत इसके होते, जो करे वही संकट खोते।
शुभ दिन में शुरु ये करना है, शुभ भाव से आगे बढ़ना है।।21।।

दोहा

भक्तामर पूजा करी, किया प्रभु का ध्यान।
"स्वस्ति" भी भक्ति करे, बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

चिदानंद चिद्रूप हैं, चिन्मय हैं भगवान।
शुद्ध रूप पाऊं प्रभु, शत-शत बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं मम सर्व कर्म विनाशनाय आगत विघ्न भय निवारणाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्रीफल चढ़ायें)

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय पंचकल्याणक संयुक्ताय शिवपदकर्ता भव जल निधी पोता सर्व विघ्न व्याधिहर्ता तव भक्ति प्रसादात् मम कल्याणमस्तु दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु सद्बुद्धिरस्तु धन धान्य समृद्धिरस्तु आरोग्यमस्तु विजयोस्तु सर्व रिद्धि-सिद्धि भवतु रक्ष-रक्ष हूं फट् स्वाहा।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि)
भक्तामर विधान परिसमाप्तः

समुच्चय महार्घ्य

गीता छंद

अरिहंत सिद्धाचार्य पूजूँ, ज्ञानी श्रुत सुमिरण करूं।
श्री मुनिवरों के चरण पूजूँ, वाणी माँ हृदय धरूं।।

षोडश रत्नत्रय धर्म पूजूँ, आत्महित संयम धरूं।
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम, जिन प्रभु वंदन करूं।।

जिन चैत्य चैत्यालय दरशकर, भावना शुभ भाऊँगा।
श्री मेरु नंदीश्वर जिनालय, वंदना को जाऊँगा।।

सब तीर्थ, क्षेत्र अतिशयों को, देव नर पूजें सदा।
कैलाश गिर सम्मेद की, निज प्रातः भक्ति हो सदा।।

चंपापुरी - पावापुरी, श्री सिद्ध क्षेत्रों को नमन्।
चौबीस श्री जिनराज की, भक्ति से खिलता है चमन।।

दोहा

अष्ट द्रव्य थाली सजा, प्रभु पूजन को आय।
सहस्त्र नाम वाले प्रभु, चरणों अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु सरस्वती देवी, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम - अकृत्रिम जिनबिम्बेभ्योः, नंदीश्वर द्वीप सम्बंधित जिनबिम्बेभ्योः, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरिनार, चम्पापुरी आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, चतुर्विंशति तीर्थंकर, गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो, जिनेंद्रेभ्यो समुच्चय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति पाठ

श्री चंद्र सम हे शांति प्रभु जी, आऊँ अब शरणा तेरे।
हम शील गुणव्रत धार लें, औ दोष सब जग के हरें।।

सुर देव नर पूजें सदा, श्री शान्ति हित ध्याते उन्हें।
चौंतीस अतिशय युक्त हैं, सुख भव्यजन पाते जिन्हें।।

परम शान्ति अनूप आनन्द, ध्यान में तल्लीन हैं।
पाई जिससे सिद्धि तुमने, वह रतनत्रय तीन हैं।।

सम्पूर्ण प्राणी मात्र को, और ध्यानी को सुख सम्पदा।
राजा प्रजा अरू सर्वजन को, कष्ट ना होवे कदा।।

होवे सुवृष्टि कुदृष्टि खोवे, व्याधि सब की दूर हों।
त्रैलोक्य नाथ की भक्ति से, हृदय सदा भरपूर हो।।

झूठ हिंसा क्रोध कर्मों से किया, तन मन मलिन।
सत्य संयम ध्यान कर, खिल जावे भव्यों का सुमन।।

दुष्कृत्य और दुःकाल सब, प्रभु पास न आवें कभी।
पा नेह दृष्टि तेरी प्रभु जी, स्वस्थ जन होवें सभी।।

दोहा

चहुँ कर्मो को नष्ट कर, लिया है केवलज्ञान।
तीन लोक में शान्ति हो, त्रिलोकी भगवान।।

गीतिका छंद

हृदय कमल हो ज्ञान लक्ष्मी, पाऊँ फिर परमात्मा।
गुण अनंतानंत धारूँ, ध्याऊँ सदा निज आत्मा।।

वाणी हित-मित नित उचारें, चतुर्विधि सेवा करें।
श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र मेरे, अष्ट कर्मों को हरें।।

तव चरण हो मम हृदय में, हृदय चरणों में रहे।
श्री तरण तारण भव निवारण, त्याग कर मुक्ति गहे।।

पूजन करी प्रभु आपकी, यदि हो गई गलती कहीं।
अज्ञान और प्रमाद वश, मैंने उसे जाना नहीं।।

क्षमा करना, क्षमा करना, क्षमा करना नाथ जी।
शेष जीवन जो है मेरा, तव चरण हो साथ जी।।

कर्म क्षय हो बोधि पाऊँ, गमन हो सुगति जी।
अंत समय समाधि पाऊँ, ध्यान हो तुम चरण जी।।

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

।।नौ बार णमोकर मन्त्र का जाप करें।।

विसर्जन

गीतिका छंद

जानकर अन्जाने में प्रभु, हो गई जो गल्तियाँ।
प्रायश्चित दे क्षमा करना, शुद्ध हो मेरा जिया।।

मन्त्र पूजन ज्ञान ध्यान शुभाचरण से हीन हूँ।
बुद्धि मेरी शुद्ध होवे, प्रभु चरण में लीन हूँ।।

नित्य पूजा भक्ति से, आराधना मैं नित करूँ।
सर्व दोषों का हरण कर, कर्म को नित परिहरूँ।।
मेरी पूजा भक्ति में, आये यहाँ जो देव गण।
मैं करूँ उनका विसर्जन, और प्रभु चरणों नमन।।

।।इत्याशीर्वादः।।

श्री भक्तामर पाठ

(हिन्दी रूपान्तरण)

आदिकाल में आदि जिन, आये आदिनाथ।
धर्म धार शिव पथ चले, भक्त झुकायें माथ।।

शंभू छंद

भक्त झुके चरणों में आके, मुकुट मणि से निकली प्रभा।
पाप तिमिर सब नाश हो गया, दिव्य दिवाकर ज्ञान सभा।।
भव समुद्र में डूब रहे जो, अवलंबन आपहि देते।
आदि जिन के चरण कमल को, वंदन बार-बार करते।।1।।
सकल तत्त्व के ज्ञाता हैं जो, बुद्धि पटु हर कार्य करें।
वह सुरेन्द्र भी स्तुति करता, तीन लोक का चित्त हरें।।
हैं जयवन्त जिनेश्वर जग में, हम जयकार लगाते हैं।
स्तुति वन्दन भक्ति करके, चरणन शीश झुकाते हैं।।2।।
सुर से अर्चित चरण कमल हैं, ज्ञानी जग में कहलाते।
मंद बुद्धि मैं स्तुति करता, नहि लज्जा नहि शर्माते।।
जल में चन्द्र की छाया पाने, बालक ही जिद करता है।
बुद्धिमान सच्चाई जाने, वह तो कर्म को हरता है।।3।।
हे गुणसागर चन्द्र कांति सम, रूप शांति बरसाता है।
सुर गुरु भक्ति करने जो आता, पूरी ना कह पाता है।।
प्रलय काल की पवन साथ में, मगर समूह जहाँ होवे।
कौन सिन्धु को निज हाथों से, तैर किनारा पा लेवे।।4।।
शक्ति नहीं भक्ति के बल पर, स्तुति करने आया हूँ।
लखकर मुद्रा तेरी जिनवर, मन ही मन हर्षाया हूँ।।

निज शिशु की रक्षा के हेतु, मृगि विचार नही करती।
मृगपति सन्मुख जाकर के वो, शिशु रक्षाकर दुख हरती।।5।।
कम ज्ञानी हूँ ज्ञानी जनों से, हंसने का मैं पात्र बना।
किन्तु भक्ति प्रेरित करती, अंदर भक्ति का भाव घना।।
आम्र वृक्ष में बौर आए जब, कोयल स्वयं ही बोल पड़े।
इसी तरह जिनवर भक्ति में, हम भी चरणन आन खड़े।।6।।
भव अनेक के पाप के बंधन, स्तवन से कट जाते हैं।
दुष्ट कर्म सब शीघ्रहि भागें, नहि संताप सताते हैं।
तीन लोक में भंवरे के सम, तम छाया चहुँ ओर घना।
सूर्य किरण जेसे ही निकले, अंधकार सम्पूर्ण हना।।7।।
ऐसा मैंने माना तुमको, औ स्तुति आरम्भ करी।
तीन लोक का चित्त हरेगी, भक्ति तेरी शांति भरी।।
कमल पत्र पर जल बिन्दु, मोती सम उपमा पाती हैं।
वैसी स्तुति मेरी जिनवर, सज्जन मन हर्षाती हैं।।8।।
स्तवन तेरा सब दोषों को, बस क्षण भर में दूर करे।
कथा आपकी जो भी सुनता, जनम जनम के पाप हरे।।
वह हजार किरणों वाला रवि, रहता है जो दूर गगन।
किन्तु किरण के ही प्रभाव से, खिल जाते हैं कमल मगन।।9।।
तीन भुवन के भूषण हो तुम, सब प्राणी के नाथ भी हो।
प्रभू आप सम इस धरती पर, गुण वाला दूजा ना हो।।
आश्रित सेवक जो है प्रभु, अपने सम उसको कर लेना।
नहि करो तो नहीं प्रयोजन, विनती इतनी सुन लेना।।10।।
प्रभू निरंतर लखने योग्य हो, भक्त आपका दर्श करें।
नहि सन्तोष कहीं लख करके , पावन दर्श ही पाप हरें।।
क्षीर सिन्धु इन्दु सम जल पी, खारा पानी कौन पिये।
भक्त हृदय में आप बसे हो, और कौन अब आये हिये।।11।।
शान्त व सुन्दर जितने अणु थे, उनसे हुआ है तव निर्माण।
थे उतने ही अणु धरती पर, बाकी सब थे वे निष्प्राण।।

अद्वितीय सुन्दर जिनवर को, देख आँख ना थकती है।
नहीं आपसा सुन्दर कोई, आंख कहीं ना जाती है।।12।।
अनुपम सुन्दर मुख वाले जिन, सुर नर नेत्र हरण कीना।
तीन जगत उपमायें जीती, अनुपम नाम को पा लीना।।
है कलंक के सहित चंद्रमा, कहाँ तुलना ये कर सकते।।
दिन हो तो फीका पलाश सा, कोइ भी ना उसको लखते।।13।।
पूर्ण चन्द्र जो कला सहित है, स्वच्छ चांदनी बिखर रही।
इसी तरह तीनों लोकों में प्रभु गुण बगिया महक रही।
तीन जगत में जिनगुण विचरे, जगन्नाथ पाया आधार।
रोक कोई भी ना सकता है, शक्तिहीन ना करें प्रहार।।14।।
यदि देवियों ने प्रभु का मन, डिगा नहीं जो पाया है।
नहि आश्चर्य है कोई इसमें, लज्जित हो दुख पाया है।।
प्रलय काल की वायु चलती, पर्वत गिर-गिर जाते हैं।
किन्तु सुमेरू ना हिलता है, मस्तक फिर झुक जाते हैं।।15।।
धूमबत्ती और तेल नहीं है, फिर भी दीपक कहलाते।
तीन जगत को करें प्रकाशित, मुक्ति पथ को दिखलाते।।
वायु ऐसी तेज चल रही शिखर गिरी का उड़ जाये।
हो अपूर्व दीपक प्रभु जग में, कोई नहीं बुझा पाये।।16।।
अस्त ना होते उदय ना होते, और राहु ना ग्रस पाता।
सदा प्रकाशित करके जग को, कहलाते प्रभु सुख दाता।।
घने मेघ भी ढक सकते ना, ना प्रभाव भी कम होता।
अतिशय महिमाशाली दिनकर, चरणों में सर झुक जाता।।17।।
सदा उदित रह करके जिनवर, मोह महातम नष्ट करें।
राहु गम्य ना मेघ है ढंकते, भक्तों का अज्ञान हरें।।
अधिक कांतिमय रूप है जिनका, मुख मण्डल भी दमक रहा।
हे अपूर्व जग के शशांक तुम, ये जग तुमसे चमक रहा।।18।।
दिव्य तेजमय मुख मंडल जिन, रवि शशि जैसा भषित है।
फिर दिन में रवि निशा चन्द्र से, होती क्यों वो शासित है।।

हरे भरे खेतों में फसलें, लहर लहर लहराती हैं।
नहीं काम जल मेघों का फिर, स्वयं स्वयं हर्षाती हैं।।19।।
जैसा ज्ञान तुम्हारा जिनवर, सच्चा पथ दिखलाता है।
हरि हरादि में नहीं है वैसा, बस अज्ञान बढ़ाता है।।
महारत्नों में किरणें जेसी, नहीं कांच में होती हैं।
भक्ति आपकी मेरे जिनवर, सब कर्मों को धोती हैं।।20।।

शेर चाल (तर्ज-दे दी हमें आजादी)

है श्रेष्ठ जग में हर हरादि को भी देखना।
सन्तोष पाया आप में, बस कुछ ना लेखना।।
धारती पे आपके समान कोई नहीं है।
भव भव में मन को करते हरण, आपस सही हैं।।21।।
शत स्त्रियों ने सैकड़ों ही पुत्र जने हैं।
ना दूसरा है आप जैसा कर्म हने हैं।।
चारो दिशा नक्षत्र धारें सूर्य को नहीं।
है पूर्व दिशा जन्म देती, बात है सही।।22।।
तुम्ही परम पुरुष हो, प्रभु मानते मुनि।
रवि वर्ण वाले आप हो, तम की उड़े धुनि।।
जो आपको पाता है, मृत्यु पर विजय करे।
शिव मार्ग आप ही बतायें, कार्य सब सरे।।23।।
अव्यय असंख्य आदि हो, अचिन्त्य भी तुम्हीं।
ब्रह्माण हो ईश्वर अनन्त, रूपवान भी।।
हो योगियों के ईश और, एकानेक भी।
हो ज्ञान से निर्मल तुम्ही, मुनि कहते हैं सभी।।24।।
तुम बुद्ध हो स्वर्गों के देव, अर्चना करें।
शंकर बने हो शांति से, अशांति को हरें।।
शिव मार्ग बता के बने हो, आप विधाता।
उत्तम पुरुष भी आप हो, मैं शीश झुकाता।।25।।

तीनों भुवन के दुःखहारी, नमस्कार है।
भूषण बने त्रिलोक के, जी नमस्कार है।।
तीनों जगत के परम ईश, नमस्कार है।
भव सिन्धु को सोखते जी, नमस्कार है।।26।।

चौपाई

नहिं आश्चर्य है हे जिनवर जी, दोष ना पाये तुम आश्रय जी।
दोष विविध आश्रय को पाये, स्वप्न में भी ना प्रभु के आये।।27।।
तरू अशोक ऊँचा बतलाया, निर्मल रूप प्रभु का भाया।
किरणों से तम दूर भागता, मेघ बीच ज्यों सूर्य झांकता।।28।।
सिंहासन मणियों संग प्यारा, उस पर जिन वपु शोभित न्यारा।
रवि बिम्ब किरणों से शोभित, तम हारी जन जन का मोहित।।29।।
स्वर्णमयी जन कान्तिवाला, कुन्द चमर सिर ढुरने वाला।
स्वर्ण मेरू सम जिनवर तन है, झरना सम ही ढुरे चमर हैं।।30।।
चन्द्रकांति सम छत्र त्रय हैं, रवि प्रताप को रोके तय हैं।
मोती झालर शोभ बढ़ाये, तीन जगत के ईश बताये।।31।।
सभी दिशा दुंदुभि बजती हैं, जिनवर के गुण को कहती हैं।
धर्मराज की जय जय करती, यश गाथा गा पाप को हरती।।32।।
कल्पवृक्ष की कलियां झरती, जल बिन्दु और वायु चलती।
श्री जिनेन्द्र की झरती वाणी, जीवों को है यह कल्याणी।।33।।
तन भामण्डल का उजियारा, दूर करे जग का अंधियारा।
कोटि सूर्य और चन्द्र मन्द हैं जिन दर्शन से मन आनन्द हैं।।34।।
स्वर्ग मोक्ष की खोज करी है, वाणी आगम तथ्य भरी है।
दिव्य ध्वनि सब ज्ञान कराये, भाषा स्वयं स्वयं परिणाये।।35।।

दोहा

स्वर्ण कमल की कांति सम, नख की कांति पाये।
जहाँ चरण जिनवर धरे, देवनि कमल रचाये।।36।।
महिमा जिनवर आपकी, नहीं दूजे में होय।
रवि उजाला ज्यों करे, नहिं ग्रहों में होय।।37।।

शंभू छन्द

हो मदमत्त कपोल से झरता, मद पर भौरे आते हों।
क्रोधित रूप भयंकर दिखता, काल सामने पाते हों।।
ऐसा ऐरावत हाथी भी, यदि सामने आ जाये।
देख तुम्हें छुटकारा मिलता, नाथ शरण जो पाय जा।।38।।
छिन्न भिन्न गण्डस्थल गज का, उज्ज्वल रक्त भी बहता है।
गजमोती से भूषित भूमि सिंह कभी ना डरता है।।
ऐसा अधिपति सामने आये, पर हमला ना करता है।
प्रभु चरणों का आश्रय पाकर, भक्त कष्ट को हरता है।।39।।
प्रलय काल की वायु उद्धत, दावानल भी जलती है।
चिंगारी उड़ उड़ चहुँ दिश में जा-जा करके गिरती हैं।।
विश्व को भक्षण कर लेगी यह, ऐसे सामने आती है।
किन्तु आपके नाम मंत्र से, वह तुरन्त बुझ जाती है।।40।।
कोकिल कंठ आँख में गुस्सा, क्रोध से फण को पटक रहा।
तेजी से वह आगे आता बार-बार फण झटक रहा।।
नाग दमनी सम नाम आपका, जो भी हर क्षण जपता है।
ऐसे सर्प के सर पर पग रख, आगे वह बढ़ जाता है।।41।।
अश्वध्वनि गज गर्जित होवें, शोर भयंकर होता है।
बलशाली नृप आगे बढ़कर, वार निरन्तर करता है।।
रवि तेज सम भूपति आकर, जिसको हर क्षण सता रहा।
नाम आपका लेते शीघ्रहि, उस राजा को भगा रहा।।42।।
भालों से गज को मारा है रक्त की नदिया बहती है।
योद्धा उसमें तैर के आते, मृत्यु सामने दिखती है।।
उस अजेय को जीत भक्त वह, नाथ का आश्रय जो पाये।
चरण कमल की महिमा है ये, चरण कमल में झुक जाये।।43।।
सिन्धु क्षुभित भीषण लहरें हैं, जाकर शिखर से टकराती।
मगरमच्छ धड़ियाल हैं क्रोधित, बड़वानल भी जल जाती।
शिखर पे स्थिर उस जहाज को, कोई नहीं बचा पाये।
जाप करें जिनदेव आपका, वह भी दुख से बच जाये।।44।।

भीषण रोग से पीड़ित है जो, और जलोदर से झुकता।
आशा नहीं है जीवन की औ, मृत्यु राह को वो तकता।।
किन्तु आपके चरण कमल की, धूल को तन पर लगा लिया।
कामदेव सम सुन्दर जग में रूप को निश्चित धार लिया।।45।।
सिर से पग तक बेड़ी बंधी है, खींच खींच कर कसी हुई।
जांधे छिली अति दुख पाता, घोर वेदना उसे हुई।।
ऐसा नर यदि नाम आपका, नित्य निरन्तर जपता है।
बंध रहित हो बेड़ी टूटें, उसको भी सुख मिलता है।।46।।
सिंह द्विपेन्द्र अग्नि वारिधि औ, युद्ध जलोदर बंधन हैं।
गुण स्तवन तो करे आपका, होता सुख अभिनन्दन है।।
अष्ट भयों का नाश करे वह, सुख सागर को पाता है।
भीषण से भीषण कष्टों को, क्षण में दूर भगाता है।।47।।
हे जिनेन्द्र गुणरूपी माला, आज बनाकर लाया हूँ।
सुन्दर सुन्दर गुण पुष्पों से, इसे सजाकर लाया हूँ।।
''मानतुंग'' के ही जैसे वह, मुक्ति सुन्दरी वर लेंगे।
कह 'स्वस्ति' श्रद्धा के संग जो, इसे कंठ में पहनेंगे।।48।।

दोहा

आदिनाथ की भक्ति से, होता है कल्याण।
स्वार्थ न हो यदि भक्ति में, मिल जाते भगवान।।

श्री आदिनाथ चालीसा

(अतिशय क्षेत्र-रानीला)

दोहा

सुमरूँ श्री अरिहंत को, बन्दूं सिद्ध अनन्त।
आचारज उवज्झाय सब, बनें मुक्ति के कंत॥
आदिनाथ आदि प्रभु, प्रथम तीर्थंकर जान।
रानीला के आदि को, कोटि-कोटि प्रणाम॥

चौपाई

जय श्री आदिनाथ जिन स्वामी, तीन लोक के अंतर्यामी।
ऋषभनाथ जी नाम तुम्हारा, सारी दुनियां में जयकारा॥
मरुदेवी के हो तुम नन्दन, शत-शत करते तुमको वन्दन।
नाभिराय के राजदुलारे, जन-जन को प्राणों से प्यारे॥
असि मसि कृषि के हो उपदेशक, सृष्टि रचना की तुम बेशक।
शब्द अंक का ज्ञान कराया, ब्राह्मी सुन्दरी को सिखलाया॥
भरत बाहुबलि पुत्र तुम्हारे, तप करके वे मोक्ष सिधारे।
इन्द्र नीलांजना नृत्य दिखाया, मृत्यु देख वैराग्य जगाया॥
छः महीने तक तुम तप कीना, घोर तपस्या में मन लीना।
तप कर केवल ज्ञान उपाया, भव्यों को उपदेश सुनाया॥
नर तिर्यंच देवगण आते, प्रभु वाणी सुन मन हर्षाते।
अन्त आयु जब हो गई पूरी, मुक्ति सुन्दरी से नहीं दूरी॥
धर्म तीर्थ कीना संचालन, करते हैं हम उनका पालन।
परम्परा आगे बढ़ आई, भव्यों ने भी मुक्ति पाई॥
निज पर का कल्याण कराया, आदिनाथ का यश जग गाया।
रानीला वो गाँव है सुन्दर, टीला बना था जिसके अन्दर॥
टीला आ रणजीत खुदाया, मिट्टी संग प्रतिमा को पाया।
खोदा धीरे-धीरे टीला, आदिनाथ प्रगटे जिन शीला॥
क्वाँर सुदी दशमी शुभ आई, प्रगट भये त्रिभुवन जिनराई।
चक्रेश्वरी देवी भी प्रगटी, जन-जन की विपदायें विघटी॥

सुन्दर मूरत महामनोहर, अचरज करते सब नारी नर।
लेके घर मूरति को जाता, दर्शन कर मन में हर्षाता॥
धन-दौलत का लोभ दिखाया, शासन ने भी डर बतलाया।
श्रद्धा उसने अधिक दिखाई, श्रावक जन ने मूरति पाई॥
अद्भुत महिमा तुम प्रगटाई, चमत्कार करते जिन राई।
मानतुंग ने तुमको ध्याया, ताले टूटे बाहर पाया॥
चक्रेश्वरी जी भक्त तुम्हारी, आदि भक्त के संकट हारी।
वंदे मानतुंग को राजा, सफल होय सब उसके काजा॥
जो भी ध्यान तुम्हारा ध्याते, संकट उसके सब कट जाते।
पुत्रहीन निज वंश चलावे, निर्धन भी धनवान कहावे॥
नेत्रहीन प्रभु दर्शन पावे, बहरा कानों सुन लग जावे।
श्री मनफूल ने ध्यान लगाया, कैंसर जैसा रोग भगाया॥
वैशाखी लेकर जो आया, वापिस उसे पैदल पहुँचाया।
भक्तों की नैया करो पारा, तुम बिन स्वामी कौन सहारा॥
एक बार जो छवि लख जाता, बार-बार दर्शन को आता।
महिमा तुम्हारी है अति सुन्दर, गाते हैं सब ही नारी नर॥
खारा पानी मीठा होवे, बंजर भूमि बीज को बोवे।
इनके गुण हम कहाँ तक गावें, पार नहीं सुर नर भी पावें॥
मन में जो वांछा कर आते, ध्यान लगा उसका फल पाते।
"स्वस्ति भूषण" भावना भाये, सबके प्रभु जी बनो सहाये॥

दोहा

चालीसा चालीसा दिन, पाठ करे जो कोय।
सुख सम्पत्ति पावे अतुल, दुख दरिद्र सब खोय॥
आदि प्रभु चौबीस जिन, मूरत है मनहार।
भक्ति करते भाव से, हो जाते भवपार॥

जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं अर्ह श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

आरती श्री आदिनाथ जी

आदीश्वर बाबा मेरे, काटो सब कर्म के फेरे।
हम सब उतारें तेरी आरती
ओ बाबा हम ...
जन्म अयोध्या ले करके तुम, षट् कर्मों उपदेश दिया,
ब्राह्मी सुन्दरी भरत बाहुबली, मुक्ति पथ पर चला दिया।
बाबा, स्वर्णों के दीप मैं लाऊँ, भावों को शुद्ध बनाऊँ,
हम सब उतारें ...
टीला खोदा प्रगट हुये तुम, दर्शन सबने पाया,
दुखियों के तुम बने दयालु, शरण तिहारी आया।।
बाबा, संकट ने मुझको घेरा, कर दो तुम ज्ञान सबेरा।।
हम सब उतारें ...
बड़ी दूर से आये बाबा, आरती करने तेरी,
कृपा दृष्टि अब मुझ पर कर दो, करो नहिं अब देरी।
बाबा, मेरा अज्ञान मिटाओ, कर्मों को शीघ्र भगाओ।।
हम सब उतारे ...